चन्दामामा
सितम्बर १९७४
1

Photo by: SAMBHU MUKHERJEE

STAIR-CASE

मुफ़्त

चिक्लेट्स का २ टिक्कीवाला पैक

२ टिक्कीवाले पैक में भाग्यशाली पीले चिक्लेट्स खोजो

क्या करना है?

जब भी तुम २ टिक्कीवाला चिक्लेट्स (पेपरमिंट, ऑरेंज, टूटी-फ्रूटी या पाईन एपल) खरीदो, इसे फ़ौरन दुकान पर ही खोल डालो. अंदर देखो. अगर भाग्य तुम्हारे साथ है तो तुम्हें पैक के अंदर पीले रंग का चिक्लेट्स मिलेगा. जैसे कि २ टिक्कीवाले ऑरेंज पैक में ऑरेंज चिक्लेट्स की जगह पीला चिक्लेट्स हो. अगर भाग्यवश तुम्हारा चिक्लेट्स पैक इसी तरह का इनामी पैक निकले तो इसे फ़ौरन दुकानदार को दिखलाओ और वह २ टिक्कीवाले चिक्लेट्स का एक पैक तुम्हें देगा, मुफ़्त!

जल्दी करो

२ टिक्कीवाला चिक्लेट्स ख़रीदो, और भाग्य आज़माओ

पालन-पोषण सही कीजिए; बच्चों को बोर्नविटा दीजिए!

पढ़ने लिखने में सर्वश्रेष्ठ... खेलकूद में आगे

पढ़ने और खेलने में बच्चों की खर्च हुई शक्ति की सही पूर्ति न हो तो इनका मानसिक और शारीरिक विकास अधूरा रह जाता है। रोज बोर्नविटा पीने से बच्चों की शक्ति बनी रहती है। पौष्टिक कोको, दूध, मॉल्ट और शक्कर के मिश्रण से बना हुआ बोर्नविटा बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

शक्ति, उत्साह और
स्वाद के लिए—*कैडबरिज़* **बोर्नविटा!**

OBM-0449-HIN.

अपनी रक्षा आप...

डैडी, सुनील ने आज सवेरे मुझे मारा
तुमने वापिस क्यों नहीं मारा? अपनी रक्षा आप करना सीखो!

देखो, घूँसे से बचने के लिए या तो पीछे या बाजू हट जाओ या ऐसे झुक जाओ कि वार खाली जाये।

घूँसे को कलाई पर भी रोक सकते हो।

या ऊपरी भुजा या कन्धे पर भी झेल सकते हो।

हाँ ऐसे। 'बॉक्सिंग' यानी अपनी रक्षा आप करने का यह तुम्हारा पहला सबक है।

अरे, बड़ी देर हो गयी। चलो सो जायें। रोहित, तुमने दाँत तो साफ़ कर लिए हैं न?
डैडी, मैं रोज़ सवेरे तो करता हूँ।

नहीं बेटे, ऐसे नहीं चलेगा। तुम्हें अपने दाँत हर रात और सवेरे ब्रश करने ही चाहिए। इससे दाँतों में फँसे सभी अन्न-कण निकल जायेंगे; दाँतों में सड़न नहीं होगी। तुम्हें मसूड़ों की भी मालिश करनी चाहिए ताकि वे स्वस्थ और मजबूत रहें।

चलो, हम दोनों फोरहैन्स टूथपेस्ट से अपने दाँत ब्रश कर लें।
हाँ, डैडी!

Forhans
FOR THE GUMS
फोरहैन्स
—दाँतों के एक डाक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट।

चन्दामामा
संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'
इस महीने की बेताल कथा "सोने के गहने" में एक विचित्र नीति भरी हुई है। मनुष्य किसी भी वस्तु को अपनी निजी शक्ति अथवा प्रयत्न से प्राप्त करता है, तभी उसका अनुभव कर सकता है। ऐसा न होकर केवल कामनाओं के होने से कोई प्रयोजन नहीं है। उन कामनाओं को कार्य रूप देने की शक्ति और कार्य करने की क्षमता न हो तो ऐसी कामानाओं को हवा में क़िले बनाना बताते हैं। यही बात हमें यह कहानी बताती है।
वर्ष : २७ सितम्बर १९७४ अंक : ३
A CHANDAMAMA PUBLICATION

अमर वाणी

क्षारम् जलम् वारिमुचः पिबंति,
तदेव कृत्वा मधुरम् वमंति;
संत स्तथा दुर्जन दुर्वचांसि
पीत्वा च सूक्तानि समुद्गिरंति ।। १ ।।

[मेघ समुद्र के खारे जल को ग्रहण कर मीठे जल बरसाते हैं। इसी प्रकार सज्जन लोग दुष्टों की बुरी बातें सुनकर अच्छी बातें ही प्रकट करते हैं।]

यस्य नास्ति विवेकस्तु,
केवलम् यो बहुश्रुतः;
न स जानाति शास्त्रार्थान्
दर्वी पाकरसा निव ।। २ ।।

[अधिक पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी यदि विवेक हीन हो तो वह शास्त्रों का अर्थ समझ न पायगा इसी प्रकार रसोई का स्वाद क्या कलछी को पता चलेगा ?"

धूमः पयोधरपदम् कथम त्यवात्य
वर्षांबुभिः शमयति ज्वलनस्य तेजः
दैवा दवाप्य कलुष प्रकृति र्महत्वम्
प्रायः स्वबंधु जनमेव तिरस्करोति ।। ३ ।।

[अग्नि का बंधु धुआँ किसी प्रकार मेघ का रूप धारण कर वर्षा के जल से अग्नि के तेज को शीतल बना देता है। इसी प्रकार दुष्ट स्वभाव वाला व्यक्ति भाग्यवश बड़ा व्यक्ति बन जाता है तो वह अपने रिश्तेदारों का ही तिरस्कार करता है।]

अंतर

विचित्र जुड़वाँ

[२]

[श्रावस्ती नगर के राजा दानशील के बहुत समय उपरांत तीन जुड़वें पैदा हुई। तीनों लड़कियाँ थीं। वे जन्म से लेकर किसी न किसी प्रकार के ख़तरे के शिकार होती रहीं। राजा इस संबंध में एक ज्योतिषी से सलाह ले रहा था, तभी ख़बर मिली कि तीनों जुड़वें बेहोश होकर गिर पड़ी हैं। राजा और रानी घटना-स्थल पर पहुँचे। बाद—]

राजा और रानी ने उद्यान में पहुँच कर देखा कि तीनों लड़कियाँ अचेत पड़ी हुई हैं। उनकी देह ठण्डी थी और सांस चल नहीं रही थी। इसे देख राजा और रानी घबरा गये। अपनी इस बदक़िस्मती पर वे पछताने लगे। थोड़ी देर बाद दरबारी वैद्य ने आकर धीरे से राजा का कंधा थप-थपाया, तब जाकर राजा सचेत हो गया।

दरबारी वैद्य ने चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ाकर देखा। लड़कियाँ जहाँ पर अचेत पड़ी थीं, उसके अनति दूर पर उसे एक फल दिखाई दिया। फल के ऊपर जहाँ-तहाँ दांतों के निशान दिखाई दिये। दरबारी वैद्य ने उस फल को हाथ में लेकर सूँघ कर देखा और उच्च स्वर में कहा—"ओह! यह बात है! यह तो जहरीला फल है। इसके चखने के कारण ही

लड़कियां अचेत हो गई हैं।" यों कहते वैद्य ने अपनी दवाइयों की पेटी में से कोई दवा निकाली और उसे लड़कियों की नाक के पास ले जाकर सुंघवा दी। लड़कियों का खतरा तो तत्काल टल गया, तब वैद्य ने उस फल को परिचारिका को दिखाते हुए पूछा–"क्या तुम बता सकती हो, यह फल कहां से मिला?"

इसके उत्तर में परिचारिका ने यों कहा–"मैं रोज की भांति राजकुमारियों को टहलाने के लिए राजमहल से अपने साथ ले आई। थोड़ी देर इधर-उधर घुमाकर आखिर इस पेड़ के नीचे आकर बैठ गई। राजकुमारियों को भी मैंने अपने सामने बिठलाया। इतने में राजकुमारियों ने मुझ से पूछा–'हमें प्यास लगी है, कहीं से पानी लेते आओ।' मैं थोड़ी ही देर में पानी लेकर लौट आई, तब तक बड़ी और छोटी लड़की अचेत पड़ी हुई थीं, मझली यह फल चख रही थी। मैं उस फल को हाथ में लेकर देख ही रही थी कि तभी मझली राजकुमारी भी अचेत हो गई। इससे बढ़कर मैं कुछ और नहीं जानती।"

दरबारी वैद्य ने सिर उठाकर पेड़ की ओर देखा। उस पर उसे एक गीध दिखाई दिया। तब वह चिल्ला उठा–"लो, देखो। उसी कमबख्त गीध ने यह फल नीचे पेड़ पर से गिरा दिया होगा। अरे, तुम लोग सब देखते क्या हो, उसे मार डालो।"

वहां पर इकट्ठे हुए लोगों में से एक ने गीध पर बाण चलाना चाहा, तभी वह फुर्र से उड़कर गायब हो गया।

इस बीच दवा ने अपना असर दिखाया, तीनों राजकुमारियां होश में आ गईं। तब जाकर सबकी सांस फिर से चलने लगी। इसके बाद तीनों राजकुमारियों को लेकर दरबारी वैद्य के साथ राजा और रानी भी राजमहल में लौट आये। वहां पर वैद्य ने एक और दवा दी। इसके थोड़ी देर बाद

तीनों लड़कियाँ इस तरह उठ बैठीं मानो नींद से जाग पड़ी हों! परंतु उनके चेहरों पर कहीं भी थकावट के चिह्न दिखाई न दिये। रोज़ की तरह उनके चेहरे चमक रहे थे। उनके खिले हुए चेहरे देख राजा, रानी तथा दरबारी वैद्य भी बहुत प्रसन्न हो उठे।

उस वक़्त राजकुमारियों की उम्र केवल चार साल की थी। राजा ने निश्चय कर लिया था कि ज्योतिषी के कहे अनुसार लगातार और तीन वर्ष तक राजकुमारियों को खतरों का सामना करना ही पड़ेगा। इन खतरों से बार-बार बचाना भी मुश्किल होगा। अब वह गंभीरतापूर्वक विचार करने लगा कि ये तीनों वर्ष उन्हें खतरों से कैसे बचाया जाय।

एक दिन राजा अकेले ही उद्यान में टहल रहा था। उसे एक जगह एक चट्टान दिखाई दी। उस चट्टान पर लिखा हुआ था–"यहाँ पर भूगर्भ गृह है।" राज़ा ने आश्चर्य में आकर उस चट्टान को सरका कर देखा, उसे नीचे की ओर अनेक सीढ़ियाँ दिखाई दीं।

राजा एक एक सीढ़ी को पार करते हुए जाकर एक विशाल महल में पहुँचा। राजा को स्वयं मालूम न था कि उस महल को किसने, कब और क्यों बनवाया है? उसकी सभी दीवारें दुधिया पत्थरों से निर्मित हैं। फ़र्श पर मरक़त जड़े हुए हैं। साथ ही ऐसा लग रहा था कि कई वर्ष पूर्व किसी महाराजा ने अनेक प्रकार की

विचित्र एवं मूल्यवान सामग्री के द्वारा उसका निर्माण कराया है। देखने में वह महल असाधारण प्रतीत हो रहा था।

राजा ने अत्यंत कुतूहल के साथ उस महल को देखा, फिर उसी रास्ते से लौटकर उद्याग में आया। चट्टान को यथा प्रकार वहीं पर ढक दिया। फिर उसने सोचा कि उस महल का पता सिवाय उसके और किसी को ज्ञात न हो, इस ख्याल से लिखावट वाली दिशा को भीतर की ओर ढक दिया, तब भी वह पूर्ण रूप से संतुष्ट न हुआ। इस पर आस-पास से पत्ते व घास लाकर राजा ने उस चट्टान को ढक दिया।

तब जाकर राजा अपने महल को लौट आया। उसने उद्यान के भीतर जो भूगर्भ गृह देखा था, उस संबंध में रानी को भी कुछ नहीं बताया। राजा के मन में यह विचार पैदा हो गया कि भूगर्भ गृह की बात उसको छोड़ और किसी प्राणी को भी पता तक न चले। अब ऐसा गुप्त गृह अचानक उसकी आँखों में पड़ गया है, इसलिए अपनी पुत्रियों को खतरों से बचाने के लिए आवश्यक प्रबंध करने के संबंध में उसकी दृष्टि केंद्रित हुई। राजा थोड़ा निश्चित हुआ।

सर्व प्रथम राजा ने एक सौ व्यक्तियों के लिए तीन साल तक पर्याप्त खाद्य सामग्री अपने विश्वास पात्र सेवकों के द्वारा भूगर्भ गृह में पहुँचवा दी। उन सेवकों को फिर से बाहर आने पर प्रतिबंध लगाया और राजा अकेले ही अपने महल को लौट आया। इसके बाद तीन परिचारिकाओं के साथ अपनी तीनों पुत्रियों को भी राजा उद्यान में ले गया। रानी ने सोचा कि राजा राजकुमारियों को सैर कराने कहीं ले जा रहा है।

उद्यान में पहुँचते ही राजा सीधे भूगर्भ गृह के द्वार तक पहुँचा। उसके ऊपर ढके पत्तों को फेंककर चट्टान को हटाया। दासियाँ चकित हो देखती रहीं कि

न मालूम राजा और क्या करने जा रहा है! राजा ने पहले परिचारिकाओं को राजकुमारियों के साथ सीढ़ियाँ उतरकर महल में प्रवेश करने का आदेश दिया, तब उनके पीछे वह भी भीतर चला गया, इसके बाद राजा ने एक बार चारों तरफ़ अपनी दृष्टि दौड़ायी कि ताकि यह देख ले कि उसे कोई देख नहीं रहा है, तब तुरंत चट्टान को सरका कर भूगृह के द्वार को बंद कर दिया।

एक एक सीढ़ी को पार करते परिचारिकाओं को डर लगने लगा। उनकी समझ में न आया कि राजा उन्हें तथा राजकुमारियों को इस प्रकार भीतर क्यों और कहाँ ले जा रहा है। यदि राजा से इसका कारण जानना चाहे तो उनसे सवाल करने की उनकी हिम्मत न हुई। इसलिए अपनी जान हथेली में रखकर सीढ़ियाँ पार करते हुए तीनों परिचारिकाएँ महल में पहुँच गईं। इसके पूर्व ही वहाँ पर बन्दी बनाये गये सेवकों को देखते ही परिचारिकाओं की थोड़ी-सी हिम्मत बंध गई। तब जाकर उन्हें मालूम हुआ कि यह सब प्रबंध राजा ने किसी पूर्व निश्चित योजना के अनुसार किया है।

इसके बाद राजा ने वहाँ के सौ सेवकों तथा तीन परिचारिकाओं के हाथ अपनी कन्याओं को सौंपते हुए कहा—"तुम सब जानते हो कि मेरी प्यारी ये तीनों पुत्रियाँ बहुत समय बाद हमारे यहाँ पैदा हुई हैं। ये अब चार साल की हैं। यह बात भी तुम लोगों से छिपी नहीं है कि इन चार सालों के भीतर ये कितने खतरों का सामना कर बच निकली हैं। इनकी जन्म-पत्रियों के अनुसार और तीन वर्ष तक इन बच्चियों को खतरों का सामना करना होगा। ये तीन वर्ष अगर सही सलामत बीत जायेंगे तो फिर इन्हें जिंदगी भर कोई खतरा न होगा। ये तीन वर्ष इन राजकुमारियों को इस भूगर्भ गृह में छिपाकर तुम लोगों के हाथ सौंप रहा हूँ।

इसमें तब तक कोई और प्राणी प्रवेश नहीं कर सकता!

"लेकिन एक शर्त है—मेरी पुत्रिगों की रक्षा तुम लोगों के द्वारा करने का समाचार तुम लोगों को तथा मुझे छोड़ और कोई नहीं जानता। यहाँ तक कि रानी भी नहीं जानती। मेरा विश्वास है कि जन्म से लेकर कोई दुष्ट ग्रह इन राजकुमारियों का पीछा कर रहा है। यदि उस दुष्ट ग्रह को यह मालूम हो जाएगा कि राजकुमारियाँ यहाँ पर हैं, तो वह इनके प्राण ले लेगा। इसलिए तुम लोगों का कर्तव्य है कि यह गुप्त समाचार किसी भी हालत में प्रकट न हो। तुम्हारे यहाँ रहने का समाचार अगर प्रकट हो गया तो मेरे द्वारा होना चाहिए या तुम लोगों के द्वारा। मैं अपनी तरफ़ से तीन वर्ष तक यह खबर बिलकुल गुप्त रखूंगा। इसी प्रकार तुम लोग भी इस बात को गुप्त रखते हुए सावधान रहकर मेरी सहायता करो। यदि इसके विरुद्ध कुछ हुआ और यह रहस्य कहीं प्रकट हो गया, तो इसका परिणाम तुम्हें भोगना पड़ेगा। ऐसा न होकर तुम लोग तीन वर्ष तक मेरी पुत्रियों की विश्वास पूर्वक रक्षा करोगे तो तुम लोगों को अपूर्व पुरस्कार दिये जायेंग। ऐसे पुसकार दिये जायेंगे, जो अभी तक किसी राजा ने किसी को न दिया हो!

"तुम लोगों के लिए तीन वर्ष पर्यंत आवश्यक खाद्य सामग्री तथा अन्य वस्तुएँ यहाँ पर पहुँचा दी गयी हैं। इसलिए राजकुमारियाँ जैसे इसके पूर्व राज महल में सुख पूर्वक रहा करती थीं, वैसे अब भी किसी प्रकार के अभाव के बिना ये यहाँ रह सकती हैं। यदि राजकुमारियाँ तुम लोगों से किसी चीज की मांग करे तो मुझ से बतला दो। मैं तुरंत उसका प्रबंध करूँगा। मैं जब-तब आकर तुम लोगों के कुशल-क्षेम का पता लगाता रहूँगा। अच्छा, अब मैं जाता हूँ।"

ये समाचार सुनते हो वहाँ पर के सौ सेवक तथा तीन परिचारिकाएँ पहले डर

के मारे घबरा गये, लेकिन राजा के मुंह से सारा वृत्तांत सुनने के बाद वे सब प्रसन्न दिखाई दिये।

इस पर परिचारिकाओं में से एक ने राजा से पूछा–"महाराज, पहले हम यह समझ न सकने के कारण बहुत ही डर गये कि हमको इस भूगर्भ गृह में आप क्यों ले आये हैं? लेकिन अब हम असली बात जान गये हैं। इसलिए हमें किसी बात का डर नहीं है। राजकुमारियों की रक्षा करने के संबंध में आपको हमें विशेष रूप से बतलाने की कोई जरूरत नहीं। यह तो हमारा कर्तव्य है। हम लोग अपना कर्तव्य अवश्य पूरा करेंगे। आप निश्चिंत रहिए। इस बात का हम आपको पूर्ण विश्वास दिलाते हैं; मगर हमारा संदेह केवल यही है कि आप ने अभी अभी बताया कि यह बात महारानी तक नहीं जानतीं। अब आप अकेले राज महल में लौट जायेंगे तो क्या महारानी नहीं पूछेंगी कि राजकुमारियाँ कहाँ पर हैं? आप उन्हें क्या उत्तर देनेवाले हैं!"

"यह सब मैं देख लूंगा। तुम लोग इस बात की फ़िक्र मत करो; लेकिन राजकुमारियों के बारे में सावधान रहो।" यों समझा कर राजा राज महल की ओर तेजी के साथ चल पड़ा।

उधर रानी बहुत देर तक राजा तथा राजकुमारियों को लौटते न देख बड़ी परेशान हो गयी थी। राजा राजकुमारियों को सैर कराने के लिए ले गये, बड़ी देर बाद भी उनके न लौटते देख रानी घबरा गयी कि न मालूम राजकुमारियों पर फिर कौन-सा खतरा पैदा हो गया है। वह बड़े ही व्याकुल मन से सबका इंतजार करने लगी।

इतने में राजा रोते हुए वहाँ पर आ पहुँचा। सैर कराने गये हुए राजा को अकेले लौटते, तिस पर भी रोते हुए देख रानी की हिम्मत टूट गयी और कटे पेड़ की भांति वह दहाड़े मारती नीचे गिर पड़ी। (और है)

सोने के गहने

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—" राजन, मेरा विश्वास है कि मधुसूदन की भांति न होकर तुम्हारे श्रम का फल तुम्हें अवश्य मिल जाएगा। श्रम को भुलाने केलिए मैं तुम्हें मधुसूदन की कहानी सुनाता हूँ; सुनो!"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में आर्यावर्त में मधुसूदन नामक एक किसान था। वह एक साधारण गृहस्थ था। अपने दो पुत्रों की मदद से खेतीबारी करते हुए वह आराम से अपने दिन बिताता था।

एक दिन मधुसूदन अकेले अपने घर के आंगन में बैठा हुआ था, तब उसके दिमाग में एक विचार आया। जैसे वह किसी

चीज की कमी के बिना जिंदगी गुजार देता था, पर वह धनी नहीं था। यदि उसके पास ३-४ सेर सोने के गहने होते तो वह एक बहुत बड़ा अमीर कहलाता।

उसके घर में बहुत दिनों से एक गृह-देवी रहा करती थी, पर यह बात वह गृहस्थ जानता न था। वह देवी उस घर के मालिक की किसी न किसी रूप में मदद देने के लिए मौक़े का इंतजार कर रही थी।

अब मधुसूदन के मन में इस विचार के आते ही गृह देवी ने सोचा कि उस गृहस्थ की मदद करने का मौक़ा मिल गया है। फिर क्या था, उस गृह देवी ने चारे सेर वज़नवाले सोने के गहनों की गठरी उसके सामने डाल दी।

मधुसूदन उस गठरी को देख, पहले आश्चर्य में आ गया। गठरी खोलकर जब उसने सोने को देखा तब उसके मन में आश्चर्य के साथ घबराहट भी पैदा हो गई। वह नहीं जानता था कि गठरी कैसे आ गई? मगर उसे लगा कि अपने मन में इस विचार के पैदा होने तथा उस गठरी के प्रत्यक्ष होने में कोई संबंध है!

उस गठरी को सिवाय मधुसूदन के और किसी ने नहीं देखा। उसके पुत्र सब बाहर गये हुए थे। पत्नी रसोई बनाने में डूबी हुई थी। मधुसूदन झट उस गठरी को लेकर पिछवाड़े में गया। उसे नीम के पेड़ के आवाल में गाड़ दिया। इसके बाद घर के भीतर आकर उसने इतमीनान से उस सोने के उपयोग के बारे में सोचने का निर्णय किया।

जब वह घर के कामकाज कर रहा था, तब भी उसका विचार सोने को कैसे काम में लाया जाय, इसी चिंता में निमग्न था। सारे सोने को एक ही साथ बेचा जाय? या थोड़ा-थोड़ा करके बेचा जाय? अथवा धन में बदल कर खेत खरीदे जाय? व्यापार किया जाय? वैसे तो सोने का उपयोग लाख प्रकार से किया जा सकता

है! मगर हर तरीक़े में कोई न कोई खतरा उसे दिखाई देने लगा। एक निर्णय पर पहुँचने के पहले मधुसूदन सोने के बारे में अपनी पत्नी या बच्चों को उसका पता बताना नहीं चाहता था। इसलिए उसने यह बात सबसे गुप्त रखनी चाही।

यह सोचकर वह गाँव की ओर चल पड़ा कि थोड़ी देर घूम आये तो उसके विचार काम देंगे और उसे कोई न कोई उपाय सूझ जाएगा। उसने गाँव के बीच पहुँचकर देखा कि गाँव में दो लोगों को फाँसी पर चढ़ाया जा रहा है। उस दृश्य को देख मधुसूदन घबरा गया। उसने वहाँ पर इकट्ठे हुए लोगों से पूछा कि उन्हें क्यों फाँसी पर चढाया जा रहा है।

"उन लोगों ने सोने के गहने चुराये हैं। उसका दण्ड उन्हें भोगना ही है। चोरी की सज़ा यही तो है।" किसी ने जवाब दिया।

ये बातें सुन मधुसूदन कांप उठा। उसका शरीर पसीने से तर हो गया। यह सोचते वह घर की ओर चल पड़ा कि उसे जो गहने मिले हैं, वे चोरी के तो नहीं हैं। उसका मन पाप के भय से एकदम कांप उठा।

उस दिन से लेकर मधुसूदन का मन विकल रहने लगा। उस सोने को गुप्त रूप से कैसे बेचा जाय! उसको नक़द के रूप में बदलने पर ही मन को शांति मिलेगी। मगर नक़द में बदलने का मार्ग

कोई दिखाई नहीं देता! यह उसके लिए एक मानसिक बीमारी हो गई। उसके दिमाग में यह बेतुका विचार आया कि असल में उसे जो सोना मिला है, वह भ्रम तो नहीं है! सब की आँख बचाकर मधुसूदन ने नीम के पेड़ के आवाल को खोदकर देखा। वह भ्रम नहीं है, वहाँ पर सोना है! रात में वह सपने देखने लगा कि उसको फांसी पर चढ़ाया जा रहा है। नींद में चिल्ला-चिल्ला कर वह घर भर के लोगों को घबरा देने लगा। वह डरा हुआ-सा लगता था।

मधुसूदन दिन प्रति दिन दुर्बल होता गया। उसने खेत का काम देखना बंद किया। पत्नी और पुत्रों से बात करना भी छोड़ दिया। ठीक से खाता-पीता न था, सोता भी न था। उसकी मानसिक बीमारी ने शरीर पर भी असर डाला।

पुत्रों ने अपने पिता से इसका कारण पूछा, मगर मधुसूदन ने कोई जवाब नहीं दिया, उल्टे वह खीझ उठा। पुत्रों ने अपनी माता से इसका कारण पूछा। मगर वह भी कुछ जानती न थी। आखिर वैद्य को बुला भेजा। वैद्य ने आकर जांच की और बताया कि उसे कोई बीमारी नहीं है।

मगर कुछ ही दिनों में इसी मानसिक चिंता के मारे मधुसूदन की तबीयत बिलकुल खराब हो गई और उसने खाट पकड़ ली। इसके कुछ दिन बाद वह बेहोशी की हालत में पहुँचा। उस हालत में वह कई बार ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता रहा—"सोना।", "गहने।"

तीन दिन तक वह बेहोशी की हालत में था। चौथे दिन उसने आँखें खोलकर देखा तो उसके बाजू में पत्नी और पुत्र बैठे हुए दिखाई दिये।

बड़े पुत्र ने उस से पूछा—"पिताजी! तुमने "सोना", "गहने" कहकर बार-बार याद किया। क्या कहीं सोना व गहने तुमने छिपा रखे हैं?"

मधुसूदन अपनी पत्नी और दोनों-पुत्रों की ओर देख एक फीकी हंसी हंसकर अपने बड़े पुत्र से बोला–"तुम अपनी माँ और छोटे भाई की अच्छी तरह से देखभाल करो।" यों कहकर उसने वहीं पर प्राण त्याग दिये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, मरते वक़्त मधुसूदन अचानक क्यों हंस पड़ा? सोने का उसने तो उपयोग नहीं किया, लेकिन अपनी पत्नी और पुत्रों को भी नहीं दिया, उल्टे उस रहस्य को गुप्त ही रखकर वह क्यों मर गया? इन सवालों का जवाब जानकर भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "मधुसूदन एक साधारण किसान है। उसके तथा चार सेर सोने के बीच बहुत अंतर है। गरीब को धनी बनने के लिए समाज जो मार्ग स्वीकृत करता है, ऐसे कुछ खास मार्ग होते हैं। समाज का विरोध करने की हिम्मत रखनेवाला व्यक्ति कभी-कभी चोरी जैसे अपराधों के द्वारा धनी बन जाता है। मगर मधुसूदन ने ऐसे किसी मार्ग का अवलंबन किये बिना ही सोना प्राप्त कर लिया। इसीलिए उसने उसका रहस्य गुप्त रखा। उसके मन में यह विचार स्पष्ट रूप से था कि अपने पास सोना रखना ही सामाजिक अपराध है। वह एकदम धर्मभीरु था। इसके साथ उसके मन में यह संदेह भी पैदा हो गया कि वह चोरी का माल हो सकता है। इससे सोना ही उसकी मौत का कारण बना। उसने इसलिए उस रहस्य को गुप्त रखा कि उसने सोने की वजह से जो मानसिक यातनाएँ भोगीं, वे उसकी पत्नी व पुत्र किसी भी हालत में न भोगे। वे सुखपूर्वक जीयेंगे, इसी आशा से वह हंस पड़ा था। सोने के प्राप्त होने तक वह भी तो आराम से जिया था!"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

फ़कीर की शादी

पुराने जमाने में काबूल में एक नामी डाकू रहा करता था। वह डाका डालने में बड़ा मशहूर था। उसने न केवल कई अमीरों के घर लूटे, बल्कि एक बार सुलतान के क़िले में भी पहुँचकर चोरी की और बिना पकड़े जाकर भाग गया। कई बार कोशिश करने पर भी वह सिपाहियों के हाथ न लगा, इस पर सुलतान ने ऐलान किया कि जो उसको पकड़ लाएगा, उसे बड़ा इनाम दिया जाएगा।

उस शहर में हीरों का एक जौहरी था। चोर अब तक उसके घर में घुसा न था। पर जौहरी यह सोचकर हमेशा चौकन्ना रहता था कि कभी न कभी वह डाकू उसके घर में भी घुस आएगा। जौहरी रातों में सोता न था, दूकान में ही दिन में जब-तब थोड़ी देर सो लेता था।

जौहरी की कल्पना के अनुसार डाकू एक दिन की रात को उसके घर में घुस आया। शयन कक्ष की खिड़की में से भीतर की ओर उसने झाँककर देखा।

जौहरी और उसकी पत्नी उस वक़्त जागते हुए किसी खास बात पर बातचीत कर रहे थे।

डाकू उनकी बातचीत सावधानी से सुनने लगा।

"हमारी लड़की फ़कीर को छोड़ किसी के साथ शादी करना नहीं चाहती है। अमीर के साथ उसकी शादी करने की मेरी भी इच्छा नहीं है। फ़कीर पुण्यात्मा होते हैं। लड़की भी ऐसा ही पति चाहती है। मैं समझता हूँ कि उसकी इच्छा की पूर्ति करना ही उचित है। तुम अपना विचार बताओ!" जौहरी ने अपनी पत्नी की राय जानने के ख्याल से पूछा।

ज्ञानप्रकाश वर्मा

"पिता और पुत्री जब एक निर्णय पर पहुँच गये हैं तो बीच में मैं अड़ंगा क्यों डालूँ? इसलिए उस फ़कीर के साथ ही हमारी लड़की की शादी कर दीजिए!" पत्नी ने जवाब दिया।

"तब तो कल से कोई फ़कीर हमारी गली में आ जाय तो देख लो, कहीं वह हमारी बेटी के पति बनने योग्य है या नहीं? मैं भी इसी प्रयत्न में रहूँगा। लड़की की शादी शीघ्र कर देना उत्तम होगा।" पति ने समझाया।

ये बातें सुनने पर डाकू की आँखें चमक उठीं। उसने सोचा कि वह फ़कीर का वेष बनाकर उन्हें आसानी से धोखा दिया जा सकता है। इससे व्यापारी की बेटी के साथ उसकी सारी ज़मीन-जायदाद का वह मालिक बन सकता है। यह सोचकर वह खुश हुआ और तुरंत अपने घर चला गया।

दूसरे दिन डाकू फ़कीर का वेष धरकर भजन गाते हीरों के जौहरी के घर की तरफ़ आ निकला। जौहरी ने अपने नौकरों को भेजकर उसको भीतर बुला भेजा। आदर के साथ उसे बिठाया और वह खुद उसके सामने बैठ गया।

इतने में जौहरी की पत्नी भीतर से पंखा ले आई, डाकू को पंखा झलते बोली—"महात्मा, आपके दर्शन पाकर हमारे जन्म धन्य हो गये हैं। आपने जिन तीर्थों का सेवन किया है, उनका वर्णन कर बता दीजिए तो हम सुनकर आनंदित हो जायेंगे।"

अब तक डाकू यही सोच रहा था कि उसकी चाल चल निकली है, लेकिन अब वह बड़ी उलझन में फंस गया। उसने कभी कोई तीर्थ स्थान न देखा था। इसलिए वह बड़ी चालाकी के साथ कल्पित कथाएँ सुनाने लगा।

इतने में एक सिपाही ने आकर जौहरी से कहा–"महाशय, सुना है कि आपके घर कोई बड़े फ़कीर आये हैं। यह बात सुलतान को मालूम हो गयी, इसलिए उन्होंने शीघ्र उस महात्मा को बुला लाने के लिए हमको भेजा है।"

सिपाही की बातें सुन डाकू मन ही मन खुशी के मारे उछल पड़ा। उसने सोचा कि आज का दिन उसके लिए बड़ा ही शुभ दिन है, इसीलिए सारी बातें ठीक से संपन्न हो रही हैं। सुलतान फ़कीरों तथा महापुरुषों के प्रति श्रद्धा रखते हैं। आज मेरी क़िस्मत खुल गई है! सुलतान का सम्मान मुझे प्राप्त होनेवाला है।

जौहरी ने फ़कीर से कहा–"महात्मा, आप पहले सुलतान के पास हो आइए; फिर हम लोग मिलेंगे।"

डाकू मुस्कुराते अपनी नक़ली दाढ़ी पर हाथ फेरते सिपाहियों के साथ दरबार में गया। सुलतान ने उसको देखते ही कहा–"आइए, पधारिए! हमारा कारागार बहुत दिनों से आपका इंतज़ार कर रहा है?"

सिपाहियों ने फ़कीर की दाढ़ी खींच डाली, सुलतान के आदेश पर उसको कारागार में ले गये।

इसके बाद जौहरी ने सुलतान को पिछली रात की सारी घटना सुनाई और यह भी सविस्तार बताया कि डाकू उसके घर ज़रूर आएगा, इसकी कल्पना करके पहले ही उसने सुलतान के पास कैसे खबर भेजी, यह भी बताया।

सुलतान ने हीरों के जौहरी की कुशाग्र बुद्धि की बड़ी तारीफ़ की और उसने जिस इनाम की घोषणा की थी, उसे जौहरी को दे दिया।

अंधा भिखारी

खरसिया नामक गाँव में एक अंधा भिखारी था। उसके पास संपत्ति के नाम पर केवल एक भिक्षा पात्र था। उस पात्र के नीचे चार गुमटे थे जो चमकते थे। पर यह बात अंधा नहीं जानता था। लेकिन उसके भीख माँगते वक़्त रास्ता चलनेवालों को गुमटों की चमक दिखाई देती थी।

उसी गाँव में श्यामगुप्त नामक एक तेली था। अंधा भिखारी रोज़ भीख मांगते उस दूकान के सामने से गुजरा करता था। श्यामगुप्त अंधे को अपने निकट बुलाता, एक पैसा भिक्षा-पात्र में डाल भिक्षा-पात्र की चमक की जांच करता। श्यामगुप्त ने निश्चय कर लिया कि चमकनेवाली चीज़ सोने की ही है।

उस गाँव में भीखमदास नामक एक चोर था। श्यामगुप्त ने भीखमदास को बुलाकर समझाया—"मैं तुम्हें एक खास बात बता देता हूँ। तुम इस बात को हम दोनों के बीच गुप्त रहने दो। हमारे गाँव में एक अंधा है। उसका भिक्षा-पात्र चमकता है। लेकिन कोई यह नहीं जानता कि वह क्यों चमकता है? हम उसे चुराकर उसके रहस्य को जान लेंगे।"

भीखम ने मान लिया।

दूसरे दिन अंधा भिखारी जब श्यामगुप्त की दूकान की ओर चला आया, तब भीखमदास दूकान के पास ही था। वह भी अंधे के पीछे थोड़ी दूर चला और पूछा—"भाई, तुम्हारा घर कहाँ पर है? बेचारे न मालूम तुम रात के वक़्त कहाँ सोते हो?"

"मेरे घर-द्वार भी होगा कहीं? मैं तो आखिर एक भिखारी ठहरा! मैं तो श्मशान के पास के एक विशाल बरगद

संध्या राय

के पेड़ के नीचे सो जाता हूँ।" अंधे भिखारी ने जवाब दिया।

भीखमदास ने लौटकर यह खबर श्यामगुप्त को दी। श्यामगुप्त ने सोचा कि उसकी आँख बचाकर भीखम दास भिखारी के भिक्षा पात्र को हड़प लेगा, इसलिए भीखम को शाम तक अपने पास ही ठहराया! रात का भोजन दोनों के लिए वहीं पर मंगवाया।

भोजन के बाद श्यामगुप्त ने दूकान बंद की, रुपयों की थैली को कमर में खोंच दी, तब भीखम के साथ वह भी श्मशान की ओर चल पड़ा। थोड़ी दूर पर एक पेड़ के नीचे लेटे अंधा भिखारी दिखाई दिया। श्यामगुप्त वहीं पर रुक गया। भीखम ने बड़ी सतर्कता के साथ आगे बढ़कर अंधे के सिरहाने से भिक्षा-पात्र को उठा लिया।

इसके बाद भीखमदास श्यामगुप्त के पास लौटते हुए मन में सोचने लगा—"न मालूम इस भिक्षा-पात्र में क्या है? पर श्यामगुप्त की कमर में रुपयों की थैली जरूर है!"

भीखम के निकट आते ही श्यामगुप्त ने कुतूहलपूर्वक पूछा—"भीखमदास! जरा मुझे भी तो भिक्षापात्र को एक बार देखने दो!"

भीखम ने श्यामगुप्त के नजदीक आकर उस पात्र को श्यामगुप्त के सिर पर जोर से दे मारा। उस पात्र के दो टुकड़े

हो गये। साथ ही श्यामगुप्त चोट खाकर बेहोश हो नीचे गिर पड़ा। उसकी कमर में से रुपयों की थैली हड़प कर भीखमदास भाग गया।

थोड़ी देर बाद होश में आने पर आँखें खोल श्यामगुप्त ने चारों ओर देखा। आसपास में कोई आदमी न था, पर कमर में खोंसी रुपयों की थैली गायब थी। उसे भिक्षापात्र के टुकड़े मात्र हाथ लगे। वास्तव में वह वही चाहता था। श्यामगुप्त उन टुकड़ों को लेकर सीधे सुनार के घर चला गया।

"अजी, श्यामगुप्त जी! क्या बात है! आधी रात के वक़्त आप यहाँ पधारे हैं?" सुनार ने पूछा।

"इस पात्र के टुकड़ों के नीचे गुमटे हैं; उन्हें निकाल कर देख लो तो!" श्यापगुप्त ने कहा। सुनार ने गुमटों को निकाल कर देखा तो वे सोने की भांति चमक रहे थे।

"श्यामगुप्त जी! यह कोई वैसा बढ़िया माल नहीं है! आप इन्हें लेकर करेंगे क्या? मैं सौ रुपये दे देता हूँ, मुझे दे दीजिए!" सुनार ने पूछा।

श्यामगुप्त ने अपनी थैली के साथ पचास रुपये खो दिये थे। सुनार अगर सौ रुपये देता है तो पचास रुपये का फ़ायदा ही होगा। इसलिए वह उन गुमटों को सुनार के हाथ देकर सौ रुपये लेकर घर लौट आया।

श्यामगुप्त और सुनार के बीच जो बातचीत हुई, उसे दो चोरों ने सुन ली।

श्यामगुप्त के जाते ही सुनार ने गुमटों को गला कर देखा। वे पीतल के टुकड़े थे। उन पर दस रुपये के क़ीमती सोने का मुलम्मा चढ़ाया गया था।

"श्यामगुप्त ने धोखा दिया है। सवेरा होते ही मैं अपने रुपये वापस ले आऊँगा।" यों अपनी पत्नी से बताकर सुनार ने पीतल के उन टुकड़ों को एक पेटी पर रख दिया और सो गया।

सुनार के सोते ही चोर उसके घर में घुस आये और पीतल के उन टुकड़ों को लेकर भाग खड़े हुए।

सवेरे जागते ही सुनार ने पीतल के टुकड़ों की खोज की, लेकिन वे कहीं दिखाई न दिये। उसने अपनी पत्नी से पूछा तो उसने जवाब दिया—"आपने रात को उन्हें पेटी पर रख दिये हैं न?"

"पेटी पर नहीं हैं, हमारे सौ रुपये मिट्टी में मिल गये।" यों कहकर वह श्यामगुप्त के घर गया और बोला—"तुमने मुझे पीतल के टुकड़े दिये हैं, मेरे सौ रुपये मुझे वापस कर दो।"

श्यामगुप्त ने सुनार की ओर शंका भरी दृष्टि से देखा और पूछा—"तुम पीतल के वे चारों गुमटे मुझे दे दो, मैं सौ रुपये वापस कर देता हूं।"

अपने रुपयों की आशा छोड़ सुनार घर लौट रहा था, तब उसे गाँव के बाहर दो चोर पीतल के टुकड़ों को बांटने में मनमुटाव होने के कारण लड़ते दिखाई दिये। वे सुनार को देखते ही भाग गये।

"चोर, पकड़ लो! भागने न दो!" सुनार चिल्ला उठा।

राजभटों ने दोनों चोरों को पकड़ लिया और सुनार को भी साथ ले राजा के पास पहुँचे।

राजा ने चोरों से पूछा—"तुम दोनों क्यों लड़ रहे थे? सुनार ने तुमको पकड़ने के लिए क्यों हो-हल्ला मचाया?"

चोरों ने हाथ जोड़कर कहा–" महाराज, हमने आधी रात के वक़्त सुनार के घर ये टुकड़े चुराये हैं। उन्हें बाँटने में हम झगड़ा कर रहे थे, तब सुनार ने आकर हमें सिपाहियों से पकड़वा दिया।"

इस पर राजा ने सुनार से पूछा–" ये टुकड़े तुमको कहाँ से मिले?"

" महाराज! तेली श्यामगुप्त ने सोने के गुमटे बताकर इन्हें मेरे हाथ बेचा है। सोने के लोभ में पड़कर आगा-पीछा सोचे बिना मैंने सौ रुपये देकर इन्हें खरीद लिया। इन्हें गलाकर देखता हूँ, तो पीतल के गुमटों पर सोने का मुलम्मा चढ़ाया गया है। श्यामगुप्त ने मुझे दगा दिया है, यह सोचते मैंने उन टुकड़ों को पेटी पर रख दिया। मगर सवेरे उठकर देखता हूँ तो गायब हैं! श्यामगुप्त के घर जाकर पूछा तो उसने बताया कि पीतल के टुकड़े लौटाकर सौ रुपये लेते जाओ। वहाँ से घर लौटते मैंने देखा कि इन पीतल के टुकड़ों के वास्ते ये दोनों चोर लड़ रहे हैं।" सुनार ने राजा से कहा।

राजा ने सिपाहियों को भेजकर श्यामगुप्त को बुला भेजा और पूछा–"तुम्हें ये टुकड़े कहाँ से मिले?"

श्यामगुप्त ने सारा वृत्तांत आदि से अंत तक बताया कि उसने भीखम के साथ मिलकर कैसे भिखारी के भिक्षापात्र को हड़पने का प्रयत्न किया और भीखम ने उसके साथ कैसे दगा दिया, वगैरह!

तब पता लगाने पर मालूम हुआ कि भीखम गाँव को छोड़ कहीं भाग गया है।

राजा ने अंधे को बुलाकर पूछा–"तुम्हें यह भिक्षापात्र कहाँ से मिला?"

"आप जैसे धर्मात्मा ने मुझे यह पात्र दिया। वह भी जाता रहा। अब मैं पत्तल में खाता हूँ।" अंधे ने कहा।

इस पर राजा ने श्यामगुप्त को एक सौ पचास रुपये तथा सुनार को पचहत्तर रुपये का जुर्माना लगाया, वे सारे रुपये अंधे को दिलवाकर चोरों को क़ैद में रखवाया। उन रुपयों से अंधा आराम से अपने दिन बिताने लगा।

झगड़ालू बेवा

एक गांव में झगड़ालू के रूप में मशहूर लच्ची नामक एक बेवा थी। लल्लू और कल्लू उसके दो बेटे थे। दोनों शादी के योग्य हो चुके थे, पर लच्ची के झगड़ालूपन से ड़रकर कोई उन्हें अपनी लड़की देने को तैयार न था।

बड़े बेटे लल्लू ने अड़ोस-पड़ोसवालों की बातचीत से समझ लिया कि उसकी माँ के झगड़ालूपन की वजह से ही उसकी शादी नहीं हो पा रही है। उसने अपनी माँ को अच्छा सबक़ सिखाना चाहा। वह मौक़ा भी जल्दी आ गया। एक बार पड़ोसिन अपनी दीवार पर खड़े लच्ची के घर के मीठा नीम के पत्ते तोड़ रही थी, इसे देख लच्ची उस पर टूट पड़ी।

लल्लू को यह बुरा लगा। उसने खीझकर कहा—"माँ, मान लो, उसने मीठा नीम चुरा ही लिया है, तो क्या हुआ? इसके लिए इतना झगड़ा-टंटा खड़ा करने की क्या ज़रूरत है? वे सारे पत्ते लेकर हम क्या करेंगे? वह पेड़ को उठाकर तो नहीं ले गई है न? पत्ते तोड़ने पर उसमें फिर से कोंपलें उग आएँगी? इससे हमारा घर डूब तो नहीं जाएगा? तुम्हारी वजह से ही हमारी शादियाँ नहीं हो रही हैं। हम से भी छोटे युवक बच्चों के बाप बन गये हैं। बच्चों की किलकारियों से हमारा घर भी गूंज उठता, मगर तुम्हारी वजह से हमारी शादियां न हुईं, उल्टे हमारा घर भूतों के अड्डा जैसा हो गया है!"

इस पर लच्ची और बिगड़ गई और बोली—"अरे दुष्ट! मैंने तुम्हारा जन्म दिया, पाला-पोसा, बड़ा किया तो मेरे ही मुँह पर तुम ताला लगाना चाहते हो?

तुम्हें ऐसा घमण्ड हो गया हो तो तुम अपना हिस्सा लेकर अलग से रहो ।"

लल्लू को भी अलग रहना अच्छा मालूम हुआ । उसने अपनी जायदाद के तीन हिस्से किये, एक हिस्सा अपनी माँ को, एक अपने छोटे भाई को देकर तीसरा हिस्सा उसने ले लिया । इसके तुरंत बाद कई लोग लल्लू के साथ अपनी लड़की ब्याहने आगे आये । लल्लू ने एक गाँव में एक कन्या को देखा, वह उसे पसंद भी आ गयी । यही बात उसने अपनी माँ से कहकर रिश्ता पक्का कर लाने को कहा ।

"जब तुम हम से अलग हो गये हो, तब तुम्हारे साथ हमारा कोई नाता नहीं ।" माँ लल्लू पर बरस पड़ी ।

लल्लू ने अपनी पसंद की कन्या के साथ शादी कर ली और अपनी गृहस्थी अलग संभालने लगा । कुछ महीने बाद लल्लू की पत्नी गर्भवती हो गयी और प्रसव के लिए अपने मायके गई । लल्लू ने अपनी माँ के पास जाकर विनयपूर्ण स्वर में कहा–"माँ, मेरी पत्नी अपने मायके गई है । मैं रसोई बनाना नहीं जानता । उसके लौटने तक मैं तुम्हारे घर में खाना खाऊँगा, इसका जो भी खर्च होगा, मैं दे दूँगा ।"

लच्ची ने थोड़ी देर सोचकर बताया– "तुम्हें खाना खिलाने में मुझे कोई एतराज नहीं, लेकिन मैं अपने हिस्से की जायदाद तुम्हारे छोटे भाई के नाम लिखा चुकी

हूँ। ज़रा उससे पूछकर तो देख लो, वह क्या कहता है?"

माँ की इस वक्र बुद्धि पर लल्लू को बड़ा दुख हुआ। वह अपने घर लौट आया, खुद खाना पका लेता, अड़ोस-पड़ोस की महिलाएँ तरकारी-बरकारी दे देती तो उससे काम चला ले लेता।

कुछ दिन बाद लल्लू की पत्नी एक बच्चे को गोद में ले लौट आई, लल्लू के दिन फिर आराम से बीतने लगे।

इस बीच लच्ची बीमार पड़ गई। वह उठती-बैठती तक न थी। कल्लू अपनी माँ के हिस्से की जायदाद की कमाई खाते हुए भी माँ के वास्ते दस रुपये खर्च करके वैद्य को दिखा नहीं पाया। वह बड़ा कंजूस था।

माँ के साथ इस प्रकार जो अन्याय हो रहा था, उसे देख लल्लू सहन नहीं कर पाया। एक दिन वह अपनी माँ को देखने गया, उसने पूछा–"सुना है, तुम बीमार पड़ गयी हो! अब तुम्हारी तबीयत कैसी है?"

"बेटा, तुम आ गये? तुम मुझे अपने घर ले जाओ। यह घर तो भूतों का अड्डा है! मैं यहाँ पर एक पल भी नहीं रह सकती।" लच्ची ने कहा।

लल्लू को अपनी माँ के द्वारा पहले कही बात याद आई, उसने कहा–"माँ, तुमको अपने घर ले जाने में मुझे कोई एतराज नहीं है। मैंने अपनी सारी जायदाद अपनी पत्नी के नाम लिख दिया है, उससे पूछकर बताऊँगा।"

अपनी गलती समझकर लच्ची कुछ न कह पाई, चिंतित हो बेटे की ओर देखती ही रह गई।

इसके बाद लल्लू कल्लू को बुलाकर डांट बैठा–"अबे, तुम माँ की जायदाद खाते उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करते हो?" तब लल्लू अपनी माँ को अपने घर ले गया, उसे दवा दिलाकर स्वस्थ किया और अपने ही घर रख लिया। उस दिन से लच्ची अपने झगड़ालूपन को छोड़ सबके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने लगी।

तुम्हें ऐसा घमण्ड हो गया हो तो तुम अपना हिस्सा लेकर अलग से रहो ।"

लल्लू को भी अलग रहना अच्छा मालूम हुआ । उसने अपनी जायदाद के तीन हिस्से किये, एक हिस्सा अपनी माँ को, एक अपने छोटे भाई को देकर तीसरा हिस्सा उसने ले लिया । इसके तुरंत बाद कई लोग लल्लू के साथ अपनी लड़की ब्याहने आगे आये । लल्लू ने एक गाँव में एक कन्या को देखा, वह उसे पसंद भी आ गयी । यही बात उसने अपनी माँ से कहकर रिश्ता पक्का कर लाने को कहा ।

"जब तुम हम से अलग हो गये हो, तब तुम्हारे साथ हमारा कोई नाता नहीं ।" माँ लल्लू पर बरस पड़ी ।

लल्लू ने अपनी पसंद की कन्या के साथ शादी कर ली और अपनी गृहस्थी अलग संभालने लगा । कुछ महीने बाद लल्लू की पत्नी गर्भवती हो गयी और प्रसव के लिए अपने मायके गई । लल्लू ने अपनी माँ के पास जाकर विनयपूर्ण स्वर में कहा–"माँ, मेरी पत्नी अपने मायके गई है । मैं रसोई बनाना नहीं जानता । उसके लौटने तक मैं तुम्हारे घर में खाना खाऊँगा, इसका जो भी खर्च होगा, मैं दे दूंगा ।"

लच्ची ने थोड़ी देर सोचकर बताया– "तुम्हें खाना खिलाने में मुझे कोई एतराज नहीं, लेकिन मैं अपने हिस्से की जायदाद तुम्हारे छोटे भाई के नाम लिखा चुकी

हूँ। जरा उससे पूछकर तो देख लो, वह क्या कहता है?"

माँ की इस वक्र बुद्धि पर लल्लू को बड़ा दुख हुआ। वह अपने घर लौट आया, खुद खाना पका लेता, अड़ोस-पड़ोस की महिलाएँ तरकारी-वरकारी दे देती तो उससे काम चला ले लेता।

कुछ दिन बाद लल्लू की पत्नी एक बच्चे को गोद में ले लौट आई, लल्लू के दिन फिर आराम से बीतने लगे।

इस बीच लच्ची बीमार पड़ गई। वह उठती-बैठती तक न थी। कल्लू अपनी माँ के हिस्से की जायदाद की कमाई खाते हुए भी माँ के वास्ते दस रुपये खर्च करके वैद्य को दिखा नहीं पाया। वह बड़ा कंजूस था।

माँ के साथ इस प्रकार जो अन्याय हो रहा था, उसे देख लल्लू सहन नहीं कर पाया। एक दिन वह अपनी माँ को देखने गया, उसने पूछा–"सुना है, तुम बीमार पड़ गयी हो! अब तुम्हारी तबीयत कैसी है?"

"बेटा, तुम आ गये? तुम मुझे अपने घर ले जाओ। यह घर तो भूतों का अड्डा है! मैं यहाँ पर एक पल भी नहीं रह सकती।" लच्ची ने कहा।

लल्लू को अपनी माँ के द्वारा पहले कही बात याद आई, उसने कहा–"माँ, तुमको अपने घर ले जाने में मुझे कोई एतराज नहीं है। मैंने अपनी सारी जायदाद अपनी पत्नी के नाम लिख दिया है, उससे पूछकर बताऊँगा।"

अपनी गलती समझकर लच्ची कुछ न कह पाई, चिंतित हो बेटे की ओर देखती ही रह गई।

इसके बाद लल्लू कल्लू को बुलाकर डांट बैठा–"अबे, तुम माँ की जायदाद खाते उसके साथ ऐसा ही व्यवहार करते हो?" तब लल्लू अपनी माँ को अपने घर ले गया, उसे दवा दिलाकर स्वस्थ किया और अपने ही घर रख लिया। उस दिन से लच्ची अपने झगड़ालूपन को छोड़ सबके साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करने लगी।

कंजूसी

किसी एक गांव में अस्सी साल की एक बूढ़ी थी। उसके अपना कोई न था। उसके बड़े मकान के चारों तरफ़ चहर दीवारी थी। उस अहाते में फलों के कई पेड़ थे। उनमें काश्मीर जाति के दो सेब के पेड़ भी थे। उस औरत का पति मरते वक़्त उसे काफी संपत्ति छोड़ गया था। लेकिन वह कंजूस थी, इस वजह से वह देखते-देखते एक पैसा भी खर्च न कर पाती थी। वह भर पेट खाना भी खाती न थी। अपने पिछवाड़े में उगनेवाले पौधों के पत्ते पकाकर खा लेती। आखिर अपने पेड़ों में लगनेवाले सेब भी चखकर न देखती थी। फल बेचने पर उसे जो पैसे मिलते, उन्हें वह एक पेटी में डाल दिया करती थी।

उसके घर के पड़ोस में रहनेवाले गरीबों के बच्चे चहार दीवारी फांदकर बगीचे मे प्रवेश करते तो बूढ़ी उन्हें भगा देती थी। फल भले ही सड़ जाय, उसे कोई चिंता न थी, मगर बच्चों को वह एक भी फल देना न चाहती थी। अड़ोस-पड़ोस के लोग ईर्ष्या के कारण कहा करते थे कि बूढ़ी का नाम लेने से घड़े तक फट जाते हैं और किसी दिन सवेरे सवेरे उठकर उसका चेहरा देखने पर उस दिन का खाना भी मयस्सर नहीं होता। इस प्रकार बूढ़ी के प्रति लोगों की धारणा अच्छी न थी।

बूढ़ी का नाम गुणवती था। वह संयुक्ता नामक गांव में रहती थी।

उसी गांव में सुलाल नामक एक लड़का था जो उस गांव के मुखिये का लड़का था। वह बच्चों के एक दल को लेकर बूढ़ी के घर की चहार दीवारी लांघ आया। पेड़ों पर सेब पककर लाल-लाल

श्री ए. सी. सरकार, जादूगार

हो गये थे। बच्चे पेड़ों पर चढ़कर फल तोड़ ही रहे थे, तभी बूढ़ी एक लाठी लेकर आ पहुँची और गरजकर बोली– "अरे, कौन है, वहाँ? पकड़े जाओगे तो मार खाओगे! और तुम्हें अपनी छटी का दूध याद आएगा! समझे!" इस पर बच्चे पेड़ों पर से कूद पड़े और भाग खड़े हुए।

सुलाल ने हांफते हुए अपने साथियों से कहा–"इस बूढ़ी को अच्छा सबक़ सिखाना चाहिए!"

"हाँ, हाँ, तुम ठीक कहते हो! जरूर सिखाना चाहिए!" बाक़ी बच्चों ने उसकी हाँ में हाँ मिलाई।

मुखिये का लड़का सुलाल शहर के हाईस्कूल में पढ़ता था, वह हॉस्टल में रहता था। पर छुट्टियों में जब-तब वह गाँव में आया-जाया करता था। जल्द ही छुट्टियाँ समाप्त हो गयीं, इसलिए सुलाल शहर में चला गया। इसलिए बूढ़ी को सबक़ सिखाने के अपने निर्णय को वह अमल न कर पाया। लेकिन हॉस्टल में लौट आने के बाद भी वह अपने निर्णय को भूल न पाया। इस विचार के कारण वह हमेशा अन्यमनस्क-सा रहने लगा।

सुलाल के कमरे में अधीर नामक एक होशियार विद्यार्थी भी रहा करता था जो उम्र में सुलाल से बड़ा था। उसने एक दिन सुलाल से पूछा–"तुम क्यों आजकल कुछ परेशान मालूम होते हो? आखिर बात क्या है?"

"वैसे कोई ख़ास बात कुछ नहीं!" सुलाल ने उत्तर दिया।

"मुझे चकमा देना चाहते हो? क्या मैं इतना भी समझ नहीं पाता? सुलाल, देखो! मेरे पिताजी जादूगर हैं। मैं भी जादूगर बनने जा रहा हूँ, समझें! तुम हमेशा कुछ न कुछ सोचा करते हो? ऐसी कौन-सी उलझन है? उसे सुलझाने का कोई न कोई तरीक़ा मैं तुम्हें बतलाऊँगा। तुम मुझसे सच्ची बात बता दो।" अधीर ने समझाया।

सुलाल की आँखें खुशी से चमक उठीं। वह सोचने लगा–गुणवती को सबक़ सिखाने का उपाय अधीर बतला सकता है। वह अक्लमंद भी है। वह बड़ा ही पारखी है! उल्टे वह थोड़ा-बहुत इंद्रजाल भी जानता है। उस इंद्रजाल से वह गुणवती को चकमा दे सकता है। इसकी मदद में क्यों न लूं?

"भाई, मेरी समस्या तो गुणवती है?" सुलाल ने उत्तर दिया।

अधीर ने नाराज़ होकर पूछा–"अभी से तुम औरतों के पचड़े में फँस गये हो?"

"मगर वह औरत अस्सी साल की बूढ़ी है! समझ लो कि वह मेरी नानी की नानी बनने योग्य उम्र की है!" सुलाल ने हँसकर कहा।

अधीर ठठाकर हँस पड़ा और बोला–"यह बात तुमने पहले क्यों नहीं बताई?"

सुलाल ने अधीर को सारा समाचार कह सुनाया। उसी वक़्त एक योजना भी तैयार की गयी।

तीन सप्ताह बाद स्कूल में चार-पांच दिन की छुट्टियाँ दी गयीं। एक दिन सवेरे गुणवती के घर एक बूढ़ा साधू और उसका एक शिष्या आया। बूढ़ा साधू द्वार पर खड़े हो चिल्ला उठा–"माई अन्नपूर्णा! मैं तुम्हारे द्वार पर आया हूँ। दर्वाजा खोल दो।"

"अबे भिखमंगे! जाओ, हट जाओ। तुम्हें एक कौड़ी भी न दूँगी।" गुणवती भीतर से ही चिल्ला उठी।

"माई, मुझे भीख नहीं चाहिए और न मैं कोई भिखमंगा हूँ। तुम्हें एक वर प्रदान करने के लिए महाशिव ने मुझे कैलास से भेज दिया है। दर्वाजा खोलकर बरदान स्वीकार करो। मुझे शीघ्र लौट जाना है।" साधू बोला।

यह बात सुनकर गुणवती बड़ी खुश हुई। उसे देने की अपेक्षा दूसरों से लेने में बड़ी अभिरुचि है। उसने झट दर्वाजा खोलकर साधू और उसके शिष्य को भीतर बुलाया।
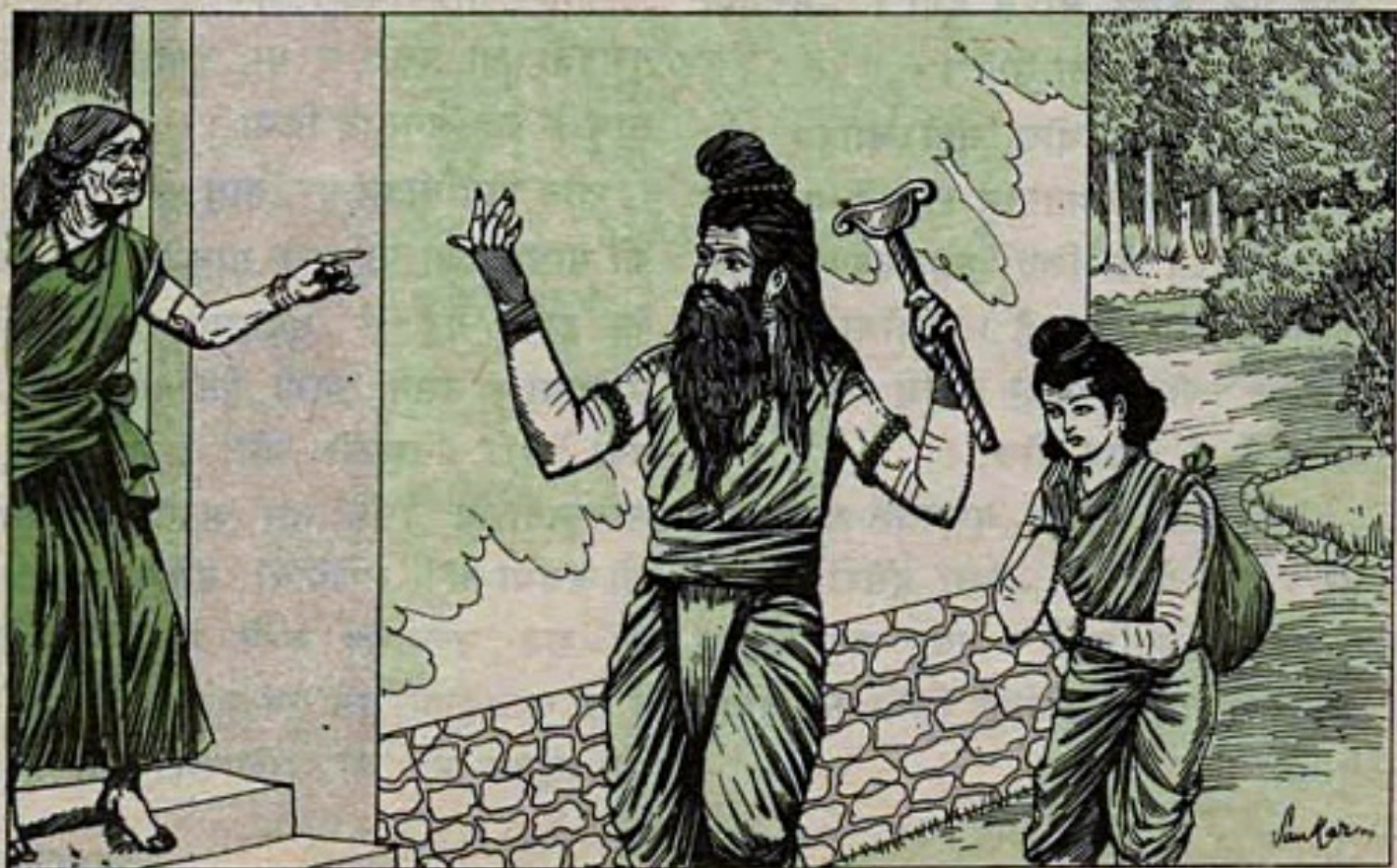
साधू अपनी थैली में से राख की पोटली निकालकर बोला—"यह तो शिवजी की अग्निवेदी से निकाली गई राख है! इसको पानी में मिलाकर लगातार तीन रात सेब के पेड़ों के तनों पर छिड़का दो। सेब का मूल्य कैसे बढ़ जाता है, तुम खुद अपनी आँखों से देखोगी! यह शिवजी की आज्ञा है! यदि तुमने इस आज्ञा का उल्लंघन किया तो तुम्हारी सात पीढ़ियोंवालों को नरक भोगना पड़ेगा। याद रखो। इस भस्म की महिमा दिखाने के लिए मैं तीन दिन बाद फिर आ जाऊँगा।" यों कहकर साधू अपने शिष्य के साथ चला गया।

सात पीढ़ियोंवालों को नरक भोगना गुणवती को पसंद न था, इसलिए उसने साधू के कहे अनुसार किया।

तीन दिन बीतने पर साधू अपने शिष्य को साथ ले आ पहुँचा। साधू ने गुणवती के द्वारा पेड़ से तुड़वाकर एक सेब मंगवाया। उसने अपनी थैली में से एक बड़ी छुरी निकाली और कहा—"माई, सावधानी से देखते तुम अपनी क़िस्मत को अजमा लो! 'स्क्रीटिंघी' नामक गुण मंत्र का शुद्ध उच्चारण करके सेब को काट दे तो क्या होगा, इसे तुम खुद देख लो।" यों कहकर मंत्र का उच्छारण करते सेब

के भीतर छुरी भोंक दी। फल के जब दो टुकड़े हुए, तब उसमें से एक सोने का सिक्का दिखाई दिया। तब गुणवती एक और सेब ले आई। उसको काटने पर उसमें से भी एक सोने का सिक्का निकल आया।

"माई, तुम भाग्यशालिनी हो! अब तुम कुछ न करो। सभी सेबों को एक कमरे में पहुँचा दो। रात के वक़्त कमरे की सभी खिड़कियाँ बंद करके उस अंधेरे में सभी फलों के दो-दो टुकड़े करते जाओ। सोने के सिक्कों को इकट्ठा करने का काम न करो। मंत्र का उच्छारण शुद्ध रूप से करो। यह बात अच्छी तरह से याद रखो। अच्छी बात है! अब मैं जाता हूँ, ये दोनों सिक्के मैं ईश्वर को अर्पित करने के लिए रख लेता । सुखीभव! सुखीभव!" यों कहते साधू वहाँ से चल पड़ा।

गुणवती ने जो अद्भुत देखा था, उसके प्रति उसका विश्वास जम गया। उसने उसी वक़्त सारे सेब तुड़वा दिये, रात भर अंधेरे कमरे में बैठकर उसने चाकू से उन सबके दो-दो टुकड़े कर दिये। बीच बीच में उसने अपनी उंगलियाँ भी काट लीं। मगर सवेरा होने पर उसका विश्वास जाता रहा। सारे फल खराब हो गये, मगर उनमें से सोने का सिक्का क्या, रत्ती भर सोना भी न निकला।

"मैंने उस मंत्र का उच्छारण ठीक से न किया होगा! आसानी से उस मंत्र का

उच्छारण भी तो नहीं किया जा सकता था!..अब ये सारे फल क्या करें? इन्हें कौन खरीदेगा?" गुणवती ने अपने मन में सोचा।

इतने में उसे गाँव के बच्चों की याद हो आई। लड़के आकर प्रेम से खा जाएँगे! कमरे को साफ़ करने की नौबत भी न आएगी! यों सोचकर गुणवती घर से बाहर आई और बच्चों को पुकारा। एक साथ कई बच्चे आ धमके! सेब के टुकड़ों को प्रेम से खाने लगे।

बच्चों को फल खाते गुणवती ने देखा तो उसके हृदय में अपार वात्सल्य उमड़ आया। उसका मन आनंद से उछलने लगा। बच्चों के चेहरों पर उसने वह अपूर्व आनंद पहली बार देखा था!

"बच्चों को खिलाने में क्या ऐसा अपूर्व आनंद प्राप्त होता है?" गुणवती आश्चर्य में आ गई।

उस घटना से गुणवती का मन बिलकुल बदल गया। उसके घर पड़ोसी गाँवों के बच्चे भी आने लगे। उसके फलों के बगीचे में बच्चों को पूरी आजादी थी!

"फलों में तुम सोने के सिक्के कैसे ला सके? उसका रहस्य क्या है?" सुलाल ने अधीर से पूछा।

"इसमें कोई बड़ा रहस्य नहीं है! यह तो बड़ा ही आसान ट्रिक है! सब लोग इसे कर सकते हैं। साधू के वेष में बूढ़ी के घर जाते समय मैं अपने साथ एक छुरी ले गया। मैंने पहले ही छुरी की मूठ पर मोम से दो सोने के सिक्के छिपका दिये थे। सेब काटते वक़्त जिस ओर सिक्के छिपकाये थे, उस ओर को छिपाकर पकड़ लिया, छुरी की नोक को फल में घुसेड़ वक़्त सावधानी से सिक्के को छूरी से निकालकर फल की फांक में पहुँचा दिया। अब समझ में आ गई है न बात?" अधीर ने कहा।

इसके बाद गुणवती दस साल ज़िंदा रही। इन दस सालों में गुणवती ने अपना धन गाँव के वास्ते, विशेषकर बच्चों के लिए दिल खोलकर खर्च किया।
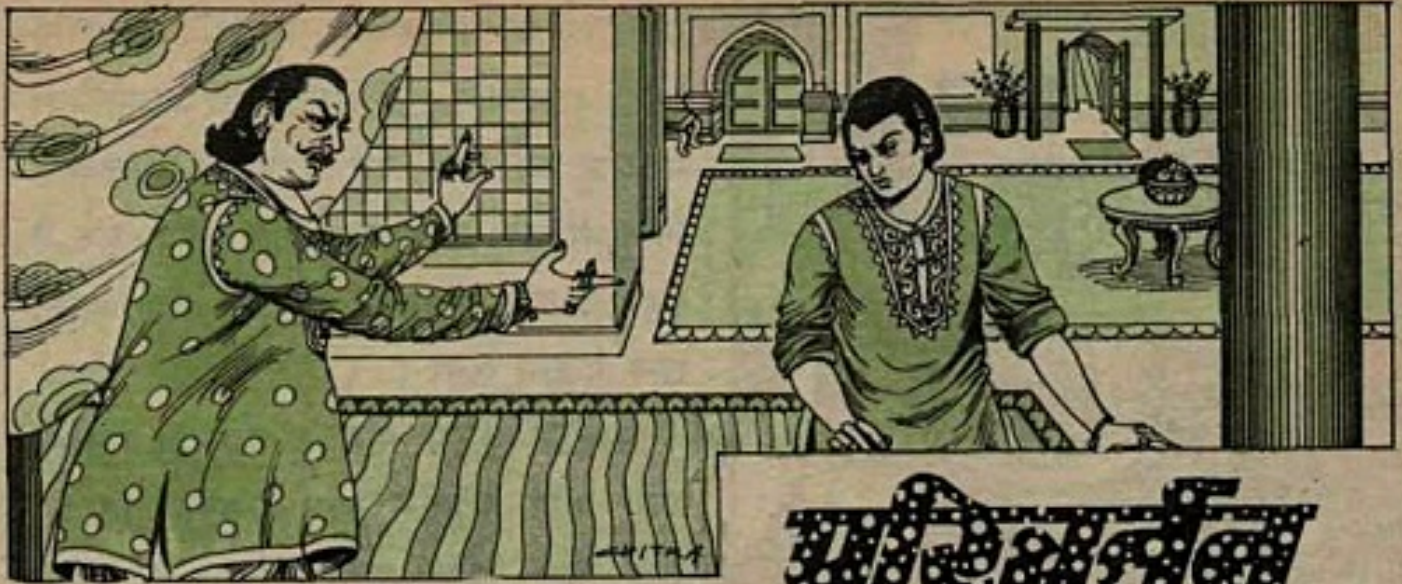
परिवर्तन

प्राचीन काल में कलिंग नगर में महाजन नामक एक बड़ा व्यापारी था। वह न केवल व्यापार करने में कुशल था, बल्कि न्याय के निर्णय में भी बहुत मशहूर था। कई लोग आपसी झगड़ों का निपटारा करने के लिए दूर-दूर से उसके पास आते और उसके निर्णय को मान लेते थे। इस तरह लोगों के बीच उसका नाम खूब फैल गया था।

महाजन के शंभु नामक एक पुत्र था। पिता का एक भी गुण उसे प्राप्त न था, लेकिन एक धनवान के पुत्र के बुरे लक्षण जैसे शराब पीना, जुआ खेलना आदि गुण उसमें भरपूर थे। उसकी इन बुरी आदतों को दूर करने के लिए महाजन ने जो हितवचन कहे, सब बेकार साबित हुए। पिता के यश को शंभु ने अपनी बुरी आदतों के कारण मिट्टी में मिला दिया।

महाजन को अपने बेटे की चिंता सताने लगी। वह इकलौता पुत्र था, इसलिए महाजन उसे कठोर दण्ड न दे पाया। वैसे उसका दिल खराब न था। पिता के प्रति उसके दिल में श्रद्धा और प्रेमभाव भी था। मगर पिता के हितवचनों पर वह कान न देता था। उल्टे वह दुर्गुणों का गुलाम बन चुका था। महाजन ने खूब सोच-विचार कर एक निर्णय कर लिया। वह यह था कि थोड़े समय तक वह शंभु से दूर रहे तो उसका आश्रय न पाकर शायद उसका दिल बदल जाय।

एक दिन महाजन ने शंभु से कहा— "सुनो बेटा! मैं समुद्री व्यापार करने दूर देशों में जा रहा हूँ, इसलिए मेरे पास जो कुछ धन है, सब मैं अपने साथ ले जाता हूँ। मैं बतला नहीं सकता कि मेरे लौटने में कितना समय लग सकता है।"

अतुल तिवारी

ये बातें सुन शंभु व्याकुल हो उठा। उसने पूछा–"धन नहीं हो तो मेरा गुजारा कैसे होगा?"

"हाँ, बेटा! मैं तो इसी के वास्ते जा रहा हूँ। धन कमाने के लिए भी तो पूंजी चाहिए? फिर भी तुम चिंता मत करो। तुम्हें जो कुछ धन चाहिए, वह मेरे मित्रों से कर्ज ले लो। लौटने पर मैं चुकता कर दूंगा।" यों समझा कर महाजन चला गया।

पिता के चले जाने पर शंभु को लगा कि उसे पूरी आजादी मिल गई है। वह और उत्साह के साथ दुर्गुणों में डूब गया। इसके लिए जो धन चाहिए था, उसके वास्ते जहाँ भी कर्ज मिला, उसने ले लिया। लेकिन कुछ समय बाद व्यापारियों ने शंभु को कर्ज देने से इनकार किया। फिर भी शंभु ने परवाह नहीं की। घर के गहने व अन्य सामान बेच कर वह अपना खर्च चलाने लगा।

उन्हीं दिनों में शंभु के पास दो नाविक आये और बोले–"बाबू, क्या बतावे? कुछ दिन पहले तुम्हारे पिता की नाव समुद्र में डूब गई है। सब लोग उसके साथ डूब मरे हैं। सारा माल समुद्र में चला गया है। हम दोनों जैसे तैसे जान बचा कर चले आये हैं।" यों कहते वे आँसू बहाने लगे।

यह खबर सुनकर शंभु एकदम कांप उठा। उसकी समझ में न आया कि भविष्य में क्या होनेवाला है। लेकिन जल्द ही उसे अपनी हालत अनुभवपूर्वक मालूम हो गई।

महाजन की मृत्यु का समाचार जानकर नगर के व्यापारी अपने कर्ज शंभु से वसूल करने लगे। उस कर्ज को चुकाने के लिए शंभु को अपने मकान को छोड़ सारी जायदाद बेचनी पड़ी। लेकिन कर्जदारों का तांता लगा रहा और नये नये कर्जदार कर्ज वसूल करने आते ही रहें।

शंभु घबरा गया। उसने अपने को प्राप्त होनेवाले कर्जों की हिसाब-किताबें खोजनी शुरू कीं। वसूल करने के लिए काफ़ी कर्ज पड़े हुए थे। शंभु के मन में फिर से आशा जगी। उन कर्जों को वसूलने के लिए शंभु ने अपने नौकरों को भेजा, मगर एक भी कर्ज वसूल न हुआ। कर्जदारों ने कहला भेजा कि हमने कभी के वे कर्ज चुका दिये हैं और चुकते की रसीदें जो हमें महाजन से प्राप्त हैं, हमारे पास सुरक्षित हैं।

अपने पिता के द्वारा लिये गये कर्ज जब शंभु चुका नहीं पाया, तब उसे यह संदेह पैदा हुआ। उसके पिता को इतने सारे कर्ज क्यों लेने पड़े? वे सब नकली पत्र होंगे। यह सोचकर शंभु ने विशेषज्ञों के द्वारा उनकी जांच कराई। विशेषज्ञों ने उन पत्रों की जांच करके बताया कि उन पर जो हस्ताक्षर हैं, वे महाजन के द्वारा किये गये हैं।

शंभु अपने पिता के कर्ज चुका न पाया। कर्ज़दारों ने पत्र लेकर उसके पास आना बंद किया। इसके साथ शंभु के पुराने मित्र भी उससे बचकर दूर भागने लगे। आख़िर नगर का एक भी आदमी उसके साथ बोलने-चालने न आया। शंभु को लगा कि सबने उसको बिरादरी से

बाहर किया है। वह बड़ा दुखी हुआ। मानसिक दृष्टि से उसमें बड़ा परिवर्तन आया। उसने भूत कालीन जीवन को एक दुस्वप्न माना और एक गरीब के रूप में जीने की आदत डाली। उसे लगा कि यही सच्ची ज़िंदगी है! इसी में बड़ा सुख प्राप्त होने लगा।

उन्हीं दिनों में शंभु की वर्षगांठ पड़ी। वह अपनी वर्षगांठ मनाने का विचार न रखता था। मगर उसके विचार के विरुद्ध वर्षगांठ के प्रयत्न बड़े भारी पैमाने पर होने लगे। किन्हीं लोगों ने आकर सारे घर का अद्‌भुत ढंग से अलंकार किया। उसके निमंत्रण के बिना ही बन्धु एवं

रिश्तेदार आ धमके! सारे घर में खुशी की लहरों को देख शंभु विस्मय में आ गया। नगर के सारे व्यापारी उसके घर आ बैठे। शंभु को आश्चर्य के साथ आनंद भी होने लगा। इन सबका कारण तो उसे मालूम न हुआ, मगर उन सबको देखते ही उसे अपने पिता की याद हो आई और उसका दुख उमड़ पड़ा। वह रोने लगा।

उसी वक़्त कहीं से आकर महाजन ने शंभु का आलिंगन किया। शंभु खुद अपनी आँखों पर विश्वास न कर पाया। वह अपने पिता को देखता ही रह गया।

"हाँ, बेटा! मैं ज़िंदा हूं। मैं हर क्षण तुम पर निगरानी करता रहा। तुममें परिवर्तन लाने के लिए मुझे यह नाटक रचना पड़ा।" महाजन ने कहा।

शंभु ने अपने पिता के पैरों पर गिरकर कहा–"पिताजी! मैं आज तक आपके दिल को दुखाता रहा, यह बात मैं अभी समझ पाया। आइंदा मैं कभी ऐसा न करूँगा। मुझे माफ़ कीजिए।"

महाजन की आँखों में आनंदबाष्प छलछला आये। इसे देख शंभु ने अपना मस्तक झुकाकर कहा–"मैं तो बदल गया हूँ, लेकिन अब हम लोग गरीब हैं। कर्जदार हमारी सारी संपत्ति ले गये हैं। हमारे कर्जदारों ने आपके हस्ताक्षरोंवाली रसीदें दिखाई हैं। आप भी उन रसीदों की जांच कीजिए!"

महाजन ने मुस्कुराते हुए कहा–"वे पत्र और रसीदें मेरे द्वारा तैयार की गयी हैं। वे सब जाली हैं। तुम्हारे पास धन न हो, इसके लिए मैंने यह सारा इंतज़ाम किया है। हमारा सारा धन मेरे ही पास है।"

शंभु इस बात के लिए बड़ा खुश हुआ कि अपनी मूर्खता व दुर्गुणों के द्वारा सारे धन का नाश होने से उसके पिता ने बचाया और तब से लेकर वह अपने पिता की सलाहों के अनुसार चलते यशस्वी हो गया।

मजाकिया

बात बहुत पुरानी है। एक गाँव में एक मजाकिया था। वह सदा सबको अपने मजाकों द्वारा हँसा देता और सबका प्रियपात्र बना हुआ था। उसी गाँव में एक धनी किसान था। वह शिकार खेलने में बड़ा कुशल था। एक वर्ष खेत में कीड़े लगने से उसकी फ़सल ख़राब हो गई। इसी चिंता में वह बीमार पड़ गया।

यह ख़बर मिलते ही मजाकिया उस धनी को देखने गया और बड़ी व्यग्रता से बोला–"बाबू साहब! पहाड़ पर से बाघ आकर मेरे घर में घुस गया है। आप आकर कृपया उसे मार डालिये और हमको बचाइए।"

"मेरी सारी फ़सल ख़राब हो गई हैं। यही चिंता मुझे खाये जा रही है। ऐसी हालत में मुझे बाघ मारने को बुलाते हो? और किसी को ले जाओ?" धनी ने कहा।

मजाकिये ने आश्चर्य में आकर पूछा–"बाबू साहब! क्या चिंता बाघ से भी भयंकर होती है?" ये बातें सुनने पर धनी किसान का पौरुष जाग उठा; खाट पर से उठकर बोला–"अरे, बंदूक़ ले आओ।"

पर मजाकिये ने उसको रोकते हुए कहा–"बाबू साहब! बाघ नहीं आया है। मैंने सिर्फ़ यह जानने के लिए झूठ कह दिया कि बाघ को मारनेवाले व्यक्ति चिंता के सामने कैसे झुक गये?"

धनी किसान हँस पड़ा; उस दिन से चिंता को छोड़ यथाप्रकार चलने-फिरने लगा।

जल्दबाज़ी

सरस्वती एक अमीर की बेटी थी। उसकी माँ उसके बचपन में ही मर गयी थी। इकलौती बेटी होने की वजह से पिता ने बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा और बड़ा किया। वह शादी के योग्य हो चुकी थी, इसलिए पिता उचित संबंध की खोज में था।

सरस्वती रोज शाम को गाँव के छोर पर पहाड़ पर स्थित काली के मंदिर में जाती। वहाँ के तालाब में हाथ-पैर धो लेती, देवी के दर्शन करती, अंधेरा हो जाने पर घर लौट आती।

लगातार चार दिन तक एक युवक सरस्वती से पहले पहाड़ पर आता और तालाब की मेंड़ पर बैठा करता था। इसे सरस्वती ने भांप ली। पांचवें दिन उसने सरस्वती के निकट आकर कहा–"मेरा नाम भूपति है। तुम्हारा नाम सरस्वती है, यह भी मैं जानता हूँ। मैं तुमको हृदय से चाहता हूँ।"

सरस्वती घबरा गयी, धीरे से बोली–"ये बातें मेरे पिताजी से कहिए।" तब वह पहाड़ से उतरकर घर चली गयी।

दूसरे दिन भूपति ने सरस्वती के पिता से मिलकर अपनी इच्छा प्रकट की। जब सरस्वती के पिता ने जाना कि वह युवक सरस्वती के साथ विवाह करना चाहता है, उसने दो दिन तक उस युवक को अपने घर अतिथि बनकर रहने को कहा।

भूपति ने सरस्वती के घर दो दिन बिताये। इन दो दिनों के परिचय के द्वारा सरस्वती का मन भूपति के अनुकूल बदल गया। लेकिन तीसरे दिन सवेरे सरस्वती के पिता ने भूपति से कहा–"अब तुम जा सकते हो! तुम्हारा विवाह सरस्वती के साथ नहीं हो सकता!"

सुधीर बंसल

उस दिन शाम को सरस्वती ने तालाब के पास भूपति से मिलकर अपने पिता के व्यवहार के लिए क्षमा माँगी।

"अब यह चर्चा अनावश्यक है! तुम तैयार हो तो बताओ, हम दोनों इस जंगल को पार करके कहीं सुखपूर्वक जियेंगे।" भूपति ने कहा।

सरस्वती ने संकोच करते हुए पूछा– "हमारे जीने का मार्ग क्या है?"

"तुम इसकी चिंता क्यों करती हो? मैं मेहनत करके ही सही थोड़ा-बहुत कमाऊँगा।" भूपति ने कहा।

सरस्वती यह कहकर अपने घर चली गयी कि वह दूसरे दिन इसी वक़्त अपना निर्णय बतायेगी। दूसरे दिन जब दोनों उसी जगह मिले, तब सरस्वती ने भूपति से कहा–"मेरे पिताजी हमारे विवाह के लिए बिलकुल तैयार नहीं हैं। चलो, हम दोनों कहीं चले जायेंगे।"

दोनों पहाड़ की दूसरी ओर उतरकर जंगल की तरफ़ चलने लगे। अंधेरा फैल गया। खूँख्वार जानवरों की चिल्लाहटें सुनाई देने लगीं। दोनों डरते-डरते चल रहे थे। भूपति सोच रहा था कि वह रात कहाँ पर बिताई जाय!

इतने में सरस्वती ने दूर पर टिमटिमाने वाली रोशनी को देखा। वहाँ पर कोई घर होगा, यह सोचकर दोनों उस ओर बढ़े! वे दोनों आखिर एक उजड़े मकान में पहुँचे। उसके आले में जलनेवाले एक दिये को ही उन लोगों ने देखा था। घर के बाहर एक चबूतरा था। घर के दर्वाजे सटे बंद थे। भूपति के ढकेलते ही किवाड़ खुल गये। भीतर एक कमरे में चूहे दौड़ रहे थे। उस कमरे के पीछे दो और छोटे कमरे थे। एक कमरे में कमर झुकी एक बूढ़ा लेटा था। उसकी खाट के बाजू में चार टीन की पेटियाँ एक पर एक सजाई गई थीं।

बूढ़ा उन दोनों को देख चौंक पड़ा और गुस्से में बोला–"तुम कौन हो?

भला-बुरा व इज़्ज़त तक नहीं जानते हो! बिना पूछे-ताछे कोई क्या अंदर आता है?"

भूपति ने पछतावे स्वर में कहा– "दर्वाजे खुले थे, इसलिए अंदर आ गये। क्या आज रात को हमें यहाँ सोने की अनुमति मिल सकती है?"

"नहीं!" बूढ़े ने स्पष्ट शब्दों में जवाब दिया।

"मेरे साथ एक औरत है! रात के वक़्त जंगल में चलने से डरती है।" भूपति ने बूढ़े से गिड़गिड़ाया।

"अच्छी बात है! तब तो बाजू के कमरे में उस लड़की को सो जाने को बताओ। उसमें सिर्फ़ एक ही आदमी के लिए जगह है! बीच के कमरे में तुम लेट नहीं सकते। चूहे तुमको खा जायेंगे! तुम जाकर बाहर चबूतरे पर लेट जाओ।" बूढ़े ने बताया।

भूपति ने बूढ़े की शर्त को मान लिया।

बाजू के तंग कमरे में बूढ़े ने एक दिया जलाकर रखा। उसमें जो छोटी-सी खाट पड़ी थी, उस पर सरस्वती लेट गई। भूपति बाहर चबूतरे पर लेट गया।

रात के वक़्त बूढ़े की आहट हुई तो भूपति जाग पड़ा। उसे टीन की पेटियों को हिलाने की आवाज़ सुनाई दी। भूपति ने चकित हो बंद दर्वाजों के छेदों में से बूढ़े के कमरे में झांककर देखा।

बूढ़े ने ऊपर रखी तीनों पेटियों को हटाकर नीचे की पेटी को खोल दिया, उसके अंदर देखते प्रसन्न हो रहा था। थोड़ी देर बाद बूढ़े ने उस पेटी को बंद किया और उस पर बाक़ी तीनों पेटियों को यथाप्रकार करीने से रख दिया।

"बूढ़ा कमबख्त शायद बहुत सारा धन छिपाया मालूम होता है! वह अब-तब मरने की हालत में है। इस धन को लेकर वह क्या करेगा?" भूपति ने मन में सोचा।

इसके बाद उसने सरस्वती को जगाया और उसको सारी बातें समझाकर कहा–

"हम दोनों कल भी यहाँ रहेंगे। कल रात को हम बूढ़े का अंतिम फ़ैसला करेंगे।" इन शब्दों के साथ भूपति ने अपनी योजना सरस्वती को सुनाई।

दूसरे दिन सवेरे भूपति ने बूढ़े से कहा– "आज रात को भी हम यहीं रहेंगे।" यह कहकर वह जंगल की ओर शिकार खेलने गया और अंधेरा फैल जाने पर वापस लौट आया।

उस रात को भी बूढ़े ने पिछली रात की भांति ऊपर की पेटियों को उतारकर नीचे की पेटी में झांककर देखा और खुश हुआ। उस वक़्त सरस्वती ने भूपति के कहे अनुसार बूढ़े के कमरे का दर्वाजा खटखटाया। बूढ़े ने दर्वाजा खोल दिया।

"चबूतरे पर सोनेवाला भूपति दिखाई नहीं देता। मुझे डर लगता है, चलो, हम उसको ढूंढ़ ले!" सरस्वती ने कहा।

इसके बाद वे दोनों बाहर गये। दर्वाज़े के पीछे छिपा भूपति बूढ़े के कमरे में घुस गया। थोड़ी देर बाद वह बाहर आया। सरस्वती के दीखते ही वह बोला– "मुझे नींद नहीं आ रही थी, इसलिए थोड़ा घूम आया। तुमने नाहक बूढ़े को कष्ट दिया, दोनों जाकर सो जाओ।"

बूढ़ा अपने कमरे में चला गया और दर्वाजा बंदकर लेट गया।

थोड़ी देर बाद भूपति ने सरस्वती के कमरे में आकर कहा–"कमबख्त बूढ़े ने थोड़ा भी धन नहीं छिपाया है। उस पेटी

में शायद उसकी पत्नी की फटी-पुरानी साड़ी है!"

इस पर सरस्वती ने व्यंगपूर्ण हँसी हँसकर कहा–"यह बात मैं पहले से ही जानती हूँ।" तब उसने बताया कि दो दिन पूर्व उसने तथा उसके पिता ने मिलकर जो योजना बनाई थी, उसका परिचय दिया।

जब भूपति से शादी करने की अपनी इच्छा सरस्वती ने अपने पिता के सामने प्रकट की थी, तब उसके पिता ने सरस्वती से पूछा था–"वह तुम्हारा पोषण कैसे करेगा?"

"ज़रूरत पड़ने पर वह मेहनत करने को भी तैयार है।" सरस्वती ने कहा था।

इस पर सरस्वती के पिता ने हँसकर बताया था–"ये सब बेतुकी बातें हैं। वह जब दो दिन हमारे घर में था, तभी मैंने उसकी जांच की। वह धन के प्रति हद से ज़्यादा लोभ रखता है। उसी धन के वास्ते वह तुमसे विवाह करना चाहता है। मैं यह बात साबित करूँगा। मैं यदि साबित न कर सकूँगा तो तुम बिना रोकटोक के उसके साथ विवाह कर सकती हो! कल शाम को तुम उसके साथ चले जाओ। जंगल के बीच एक उजड़े मकान में मैं एक आदमी को भेज देता हूँ। वह आदमी भूपति को धन का लोभ दिखाकर उसके असली रंग को प्रकट करेगा।"

इस शर्त को सरस्वती ने मान लिया था।

यह सारा वृत्तांत सुनाकर सरस्वती ने कहा–"मेरे पिताजी का कहना सच्चा साबित हुआ। जल्दबाज़ी में आकर मैं तुमसे शादी करती तो ज़िंदगी-भर मुझे पछताना पड़ता। अब मैं बच गई। अब तुम अपने रास्ते चले जाओ, मैं अपने रास्ते जाऊँगी।"

इसके बाद भूपति सरस्वती का चेहरा तक देख न पाया। वह लज्जा के मारे कहीं चला गया। सरस्वती बूढ़े के साथ अपने घर लौट आई।

दूसरे दिन सांब के गर्भ से मूसल पैदा हुआ। इसे देखकर कृष्ण ने यादवों को आदेश दिया कि मूसल का चूर्ण बनाकर उसे समुद्र में फेंक दे। इसके बाद कृष्ण ने यह घोषणा की कि कोई दारू का पान न करे, यदि कोई दारू का सेवन करता है तो उसको फांसी पर चढ़ा दिया जाएगा।

वृष्णि एवं अंधक वंशी लोग अत्यंत जागरूक रहें, फिर भी बार-बार अनेक अपशकुन दिखाई देने लगे। सर्वत्र चूहों की भरमार हो गई। यादवों के बीच अनेक अकृत्य होने लगे। बड़ों के प्रति उनमें आदर का भाव न रहा, पति-पत्नी परस्पर निंदा करने लगे। भोजन में कीड़े दिखाई देने लगे। इसी प्रकार के अपशकुन महाभारत युद्ध के पूर्व भी दिखाई पड़े थे और उन अपशकुनों ने जनता के क्षय की सूचना दी थी। इसका स्मरण करके कृष्ण ने समस्त यादवों को समुद्र के तट की ओर तीर्थयात्रा पर ले जाने का अपने मन में संकल्प किया।

तीर्थयात्रा की तैयारियाँ हुई। भारी पैमाने पर दारू और मांस बनाये गये। हाथी, घोड़े व रथों पर भी यादव सवार हो समुद्र तट पर पहुँचे और वहाँ पर सबने अपने-अपने ठहरने का प्रबंध भी कर लिया। वहीं पर थोड़ी दूर में प्रभास तीर्थ था।

वृष्णि वंशी उद्धव जो श्रीकृष्ण के अत्यंत प्रिय सखा था, वह यादव वीरों को

६५. यादवों का विनाश

समुद्र के तट पर ले गया। वहाँ पर वे लोग चिल्लाते, कोलाहल करते मनमाने ढंग से दारू का पान करने लगे। उस समय कृष्ण एवं बलराम के साथ सभी लोगों ने खूब पिया।

दारू के नशे में आकर युयुधान ने कृतवर्मा से कहा–"तुमने सोनेवाले उप पांडवों का धोखे से वध किया है, परंतु कोई भी यादव वंशी ऐसा अधर्म कभी नहीं कर सकता।" इस पर दोनों के बीच बात बढ़ी। यादव परस्पर पान पात्रों को लेकर एक दूसरे पर फेंकने लगे। इस प्रकार एक ही वंश के भीतर अकारण ही कलह प्रारंभ हुआ। देखते-देखते प्रद्युम्न भोज वंशियों पर टूट पड़ा। भोज वंशियों ने सात्यकी तथा प्रद्युम्न पर हमला किया और उस युद्ध में उन दोनों का वध किया। इस पर कृष्ण कुपित हो गये। उन्होंने मुट्ठी भर घास उखाड़ कर उसी के द्वारा जो भी सामने आया, अनेक लोगों का वध किया। आश्चर्य की बात थी कि उस घास ने मूसल का काम किया। सबने उसी घास को उखाड़ कर एक-दूसरे को मार डाला। तब सब लोग क्रोध में आकर पागलों की भांति अंधाधुंध एक दूसरे को मारने लगे। इस अवसर पर पिता ने पुत्र का और पुत्र ने पिता का भी वध किया।

अपने पुत्र तथा पोतों को मरे देख कृष्ण ने असहनीय क्रोध में आकर प्राणों

के साथ बचे हुए सभी लोगों को मार डाला। तब कृष्ण के सारथी दारुक तथा बभ्रु नामक व्यक्तियों ने कृष्ण से कहा– "भगवन, इस कलह में सभी लोग मर गये हैं। हम लोग जाकर बलराम की खोज करेंगे। उनका पता नहीं चल रहा है!"

वे तीनों बलराम को खोजते गये, आखिर उन्हें एक पेड़ के नीचे बलराम दिखाई दिया। तब कृष्ण ने दारुक से कहा–"तुम तुरंत हस्तिनापुर जाओ और पांडवों से बतला दो कि यादव सब मुनियों के शाप के लगने से मर गये हैं। यह समाचार सुनते ही अर्जुन ज़रूर दौड़ा-दौड़ा आ जाएगा।"

उसी वक़्त दारुक रथ पर चल पड़ा। कृष्ण ने तब बभ्रु से कहा–"तुम औरतों की रक्षा करो। सोने के आभूषणों के लोभ में पड़कर चोर उन्हें उठा ले जा सकते हैं।"

मगर कृष्ण के देखते बभ्रु भी एक बहेलिये के द्वारा छोड़े गये बाण के लगने से मर गया। इस पर कृष्ण ने बलराम से कहा–"मैं सभी औरतों को द्वारका में पहुँचा कर लौट आता हूँ, तब तक तुम कहीं न जाओ, यहीं पर रहो।" यों कहकर स्त्रियों को साथ ले कृष्ण द्वारका में गये, सभी नारियों को अपने पिता के हाथ सौंपकर बोले–"पिताजी! मैं अब इस नगर में नहीं रह सकता;

बलराम और मैं–हम दोनों तपस्या करेंगे।" यों समझाकर अपने पिता को कृष्ण ने प्रणाम किया और बलराम के पास लौट आये।

बलराम एक निर्जन प्रदेश में योग समाधिस्थ था। कृष्ण के देखते एक सफ़ेद सर्प बलराम के मुंह से बाहर आया और समुद्र में प्रवेश कर गया। उस सर्प का स्वागत करने के लिए वरुण तथा अन्य सर्प सामने आये।

इसके बाद कृष्ण काफ़ी समय तक भटक कर एक स्थान पर लेट गये। इतने में जर नामक एक बहेलिया शिकार खेलते उधर आ निकला। कृष्ण को दूर से देख कोई मृग समझा और कृष्ण के पैर पर बाण छोड़ दिया। तब कृष्ण अपनी देह को त्याग कर अपने तेज को पृथ्वी एवं आकाश में व्याप्त करके आसमान में चले गये। इन्द्र तथा अन्य समस्त देवताओं ने आदर के साथ उनका स्वागत किया और अपने साथ ले गये।

कृष्ण के द्वारा भेजा गया दारुक कुरुदेश में पहुँचा। पांडवों से मिलकर यादव वंशों के विनाश का समाचार सुनाया। पांडव यह समाचार सुनकर बहुत दुखी हुए। अर्जुन दारुक के साथ द्वारका में गया और अनाथा यादव नारियों को देखा। वे अर्जुन को देख रो पड़ीं। उस हालत में अर्जुन उन्हें देख नहीं पाया। तब अर्जुन सत्यभामा तथा रुक्मिणी को सांत्वना देकर वसुदेव से मिलने चला गया।

वसुदेव ने अर्जुन को गले लगाकर कहा–"अर्जुन, असाधारण राक्षसों का वध करनेवाले मेरे पुत्र अब नहीं रहें। लेकिन में अभी तक जीवित हूँ। तुम्हारे शिष्य सात्यकी एवं प्रद्युम्न के कारण यादव वंश का विनाश हो गया है। इस में किसी का भी दोष नहीं है। यह सब मुनियों के शाप का फल है। कृष्ण ने भी उपेक्षा की। कृष्ण मुझसे यह कहकर गये हैं कि

तुम यहाँ आओगे और तुम्हारे कहे अनुसार मैं करूँ।"

इसके उपरांत दारुक के साथ अर्जुन यादवों की सभा में जाकर मंत्रियों से बोला–"द्वारका नगर शीघ्र ही समुद्र में डूब जाएगा। मैं सबको इन्द्रप्रस्थ में ले जाऊँगा। आप लोग वाहन तैयार करवा दीजिए। जो कुछ धन यहाँ पर है, वह सब एकत्र कीजिए। आप लोगों के राजा बनने वाला वज्र इंद्रप्रस्थ में रहेगा। सब लोग यात्रा की तैयारियाँ कीजिए। देरी न कीजिए।"

इसके दूसरे दिन ही वसुदेव ने योग समाधि में जाकर प्राण त्याग दिये। वसुदेव की पत्नियों ने–देवकी, रोहिणी, भद्रा तथा मदिरा–उसके साथ सहगमन किया। वसुदेव के लिए प्रिय प्रदेश में ही उसका दहन-संस्कार किया गया। इसके बाद वज्र इत्यादि वृष्णि तथा अंधक कुमारों ने उस स्थल पर जल तर्पण किये।

तदुपरांत अर्जुन ने यादवों के मृत्यु-प्रदेश में जाकर उनकी उत्तर क्रियाएँ कीं। सातवें दिन अर्जुन द्वारका से निकल पड़ा। बची हुई नारियाँ उसके साथ चल पड़ीं। रथों, हाथियों तथा पैदल उन सबके बढ़ते देख उनके पीछे समुद्र धीरे-धीरे द्वारका को डुबोते आया।

अर्जुन जहाँ-तहाँ पड़ाव डालते पंचनद पहुँचा। असंख्य असहाय नारियों के साथ
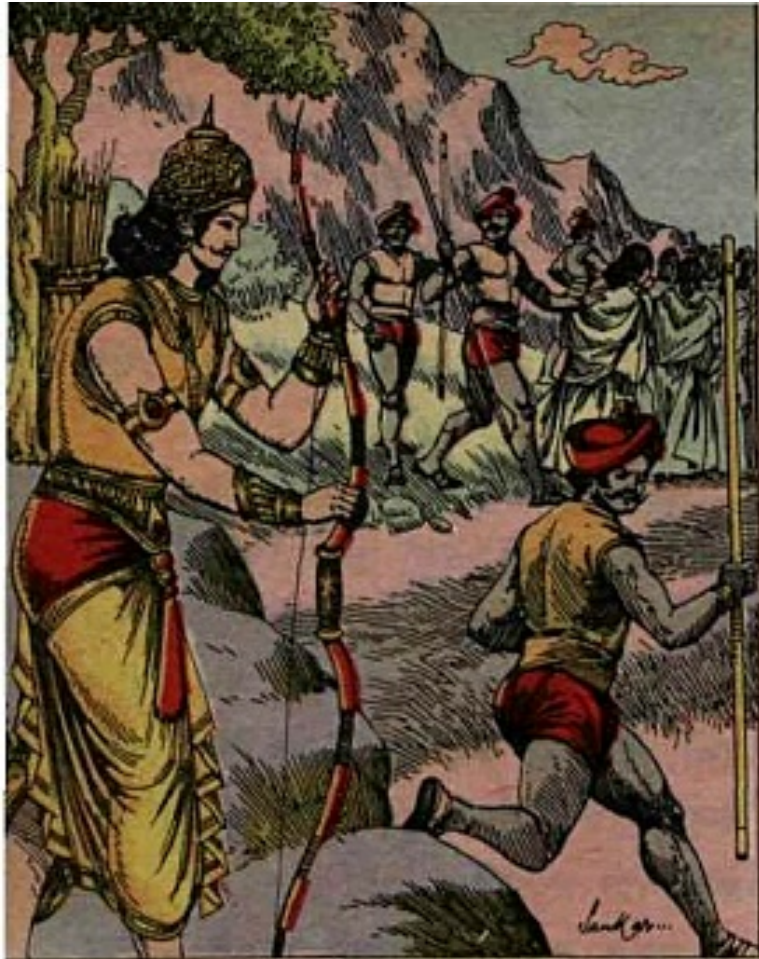
अकेले योद्धा अर्जुन को देख चोर लाठियाँ लेकर, पत्थर फेंकते औरतों पर टूट पड़े। अर्जुन ने उन्हें धमकाया, डराया, मगर उन लोगों ने अर्जुन की बातों की परवाह नहीं की। तब अर्जुन ने क्रोध में आकर अपने गांडीव पर हाथ रखा, पर उसको अपने गांडीव को चलाना मुश्किल प्रतीत हुआ। उसे अपने अस्त्रों की याद तक न आई। वह चोरों के साथ कुछ न कर पाया और अपनी उस दयनीय हालत पर वह लज्जित हुआ। उसके देखते-देखते चोर यादव नारियों को चारों तरफ़ भगा ले गये। जो नारियाँ बच रहीं, उन्हें तथा धन को लेकर अर्जुन कुरुक्षेत्र में पहुँचा।

युधिष्ठिर के निर्णय करने पर कृतवर्मा की पत्नी तथा पुत्र को मृतिकावत में, छोटे बच्चे, नारियों तथा वृद्धों को इन्द्रप्रस्थ में, सात्यकी के पुत्र को सरस्वती में रखकर वज्र को इंद्रप्रस्थ का राजा बनाया गया। अक्रूर की पत्नियों को वज्र के आश्रय में रखा गया; कृष्ण की पत्नियों में से रुकिमणी इत्यादि ने अग्नि प्रवेश किया, तो सत्यभामा वगैरह वन में जाकर तपस्या करने लगीं।

तब अर्जुन महर्षि व्यास के आश्रम में गया। अर्जुन को देखते ही व्यास ने पूछा— "अर्जुन, तुम अत्यंत दीन दिखाई देते हो, क्या हुआ है?"

इस पर अर्जुन ने उत्तर दिया— "महात्मा, मैं दुखी क्यों न होऊँगा? कृष्ण और बलराम मर गये हैं। मुनियों के शाप के कारण सभी यादवों का अंत हो गया है। असाधारण अस्त्रों की चोटों को सहन कर सकनेवाले महावीर सब घास के तिनकों से लड़कर मर गये हैं। इन घटनाओं से मेरे दिल को बड़ा धक्का लगा है। मैं समझ नहीं पाता हूँ कि जिस लोक में कृष्ण नहीं हैं, वहाँ पर मैं कैसे रह सकता हूँ? इससे भी एक भयंकर घटना हो गई है। अचानक मेरा सारा पराक्रम जाता रहा। चोर यादव नारियों को भगा

ले जा रहे थे, इसे देखकर भी मैं उन्हें रोक न पाया। मेरा मन व्याकुल है, अशांत है। मैं पागल की तरह भटक रहा हूं। मुझे क्या करना होगा?"

"हे अर्जुन, वृष्णि तथा अंधक शाप के प्रभाव से मर गये हैं। उनके वास्ते चिंता मत करो। कृष्ण उसे रोक सकते थे, पर देखते मौन रहें। शाप को टलवा देना क्या उनके लिए भी संभव था? कृष्ण के अवतार का कार्य समाप्त हो गया है। वे अपने निजी स्थान पर चले गये हैं। तुमने भी भीम, नकुल एवं सहदेव के साथ मिलकर अनेक महान कार्य किये हैं। मेरा विश्वास है कि तुम लोग कृतार्थ हो गये हो! तुम लोग भी शीघ्र उत्तम गति को प्राप्त होगे। काल स्वयं परिवर्तित होते हुए सबको बदल देता है। यह विश्व ही काल के अधीन में है। काल एक समय हम पर शासन करता है। हमें चलाता है, पर कभी हमारे अनुकूल चलता है। तुम्हारे अस्त्रों का कार्य समाप्त हो गया है। इसलिए वे सब जाते रहें! यह काल का प्रभाव है, इसलिए तुम चिंता मत करो।" महर्षि व्यास ने समझाया।

अर्जुन हस्तिनापुर को लौट आया, युधिष्ठिर को सारा वृत्तांत सुनाया।

यह सब सुनने के पश्चात युधिष्ठिर के मन में महा प्रस्थान करने का विचार पैदा हुआ। उसने अर्जुन से कहा–"भैया, समय समस्त प्राणियों को बांधकर रखता है।"

इसके बाद सभी पांडवों के मन में राज्य त्याग करके महा प्रस्थान करने की कामना पैदा हुई। युधिष्ठिर ने युयुत्स को बुलाकर उसके हाथ राज्य सौंप दिया। अपने राज्य के लिए वारिस के रूप में परीक्षित को राजा नियुक्त किया। हस्तिनापुर के लिए परीक्षित तथा इंद्रप्रस्थ के लिए वज्र को राजा के रूप में निर्णय हुआ। दोनों का पर्यवेक्षण करने का कार्य सुभद्रा को सौंप दिया। तब युधिष्ठिर ने द्वारका में मरे हुए समस्त लोगों के लिए शास्त्र विधि से श्राद्ध कर्म कराये।

मित्र-भेद

[१४]

एक दिन डुंडुक नामक एक खटमल घूमते राजा की खाट पर आ पहुँचा। राजा का बिस्तर बहुत ही मुलायम, साफ़ और सुगंध से भरा था। उस पर चलते खटमल ने एक जूँ को देखा।

"तुम राजा के बिस्तर पर क्यों आये हो? जल्दी यहाँ से चले जाओ।" जूँ ने खटमल से कहा।

इस पर खटमल ने समझाया-"तुम ऐसी बातें मत करो। घर आये अतिथि के प्रति ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए। समझदार लोगों का कहना है कि साधारण व्यक्ति के आने पर भी सज्जनों को आदरपूर्वक कहना चाहिए-'महाशय, आप अन्दर आइए। विश्राम कीजिए। आप अक्सर हमारे यहाँ क्यों नहीं आते? आपका स्वास्थ्य कैसा है? आपके आगमन पर मुझे बड़ी प्रसन्नता हो गई है।' इस प्रकार आतिथ्य देने से स्वर्ग की प्राप्ति होगी। मैं तुम्हारा अतिथि हूँ। मैंने अनेक प्रकार के मनुष्यों का रक्त चखकर देखा है। आहार विशेष के कारण उनका रक्त खट्टा-खारा, या कभी-कभी कड़ुआ होता है। ऐसे दोषों से मुक्त मीठे रक्त को आज तक मैंने चखकर नहीं देखा है। यह राजा तो बड़ा ही स्वादिष्ट व्यंजन, अच्छे फल, अनोखे जानवर एवं पक्षियों का मांस खाता है। बड़े बड़े वैद्य राजा के रक्त को हमेशा शुद्ध रखने का प्रयास करते रहते हैं। अगर तुम अनुमति दोगे तो राजा के अमृत जैसे रक्त को चूसकर मैं आनंद पाना चाहता हूँ। चाहे राजा हो या भिखारी, सुखमय

अंतिम पृष्ठ का चित्र

भोजन चाहता है। जिह्वा को ललचानेवाले रुचिकर पदार्थ न हो तो इस दुनिया में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का सेवक बनकर क्यों रहेगा? दूसरों की आज्ञाओं को क्यों मानेगा? पेट के वास्ते ही तो मनुष्य झूठ बोलता है! दुष्ट लोगों की सेवा करता है। देश-विदेशों में घूमता है। इसलिए भूख को लेकर आये हुए तुम्हारे अतिथि को राजा के रक्त को चूसने का मौक़ा दो। मुझे निराश मत करो।"

"यह कभी नहीं हो सकता। तुम्हारी सूंड बड़ी ही तेज है। उसकी डंक से बड़ी पीड़ा होती है। साथ ही तुम लगातार चूस लेते हो! तुम्हारी डंक से राजा ज़रूर नींद से जाग पड़ेगा। तब हम दोनों की जान के लिए खतरा पैदा होगा। इसलिए तुम यहाँ से जितनी जल्दी हो सके चले जाओ।" जूं ने कहा।

खटमल ने जूं के पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाया। तब जूं का दिल भी पिघल गया।

"अच्छी बात है, तब तो तुम भी रह जाओ।" जूं ने कहा।

रात को राजा आकर बिस्तर पर लेट गया। राजा ऊँघ ही रहा था, तभी खटमल ने उसके रक्त को चूसने के लोभ में पड़कर राजा के ओंठ को चुपके से काट दिया। राजा को लगा कि उसे कोई सूई से चुभो रहा है। वह तुरंत जाग पड़ा, नौकरों को बुलाकर बोला—"मुझे खटमल या जूं ने काट दिया है! उसे ढूंढकर मार डालो।"

नौकरों ने आकर सारा बिस्तर ढूंढ डाला। खटमल चालाकी से खाट के छेद में जा छिपा। मगर बिस्तर की तहों में छिपे जूं को पकड़ कर नौकरों ने मार डाला।

दमनक ने पिंगलक को यह कहानी सुनाकर कहा—"इस बैल की भांति अपनी जाति के लोगों को छोड़ विजातियों से मिलनेवाले लोग कुकुद्रुम राजा नामक नीले

सियार की भांति अकाल मृत्यु के शिकार हो जायेंगे।"

"वह कैसी कहानी है? सुनाओ तो!" पिंगलक ने पूछा।

दमनक ने यों उत्तर दिया :

कुकुद्रुम राजा की कहानी

एक शहर के निकट के जंगल में चण्डरव नामक एक सियार था। एक दिन वह आहार की खोज में शहर में चला गया। कुत्ते उसे देख भयंकर रूप से भूंकते उसे मार डालने के ख्याल से उसके पीछे पड़ गये। सियार डर गया और अपनी जान बचाने के लिए दौड़ पड़ा। आखिर वह एक रंगरेज के घर में घुस पड़ा। रंगरेज अपने कपड़ों को रंगने के लिए एक नांद में नीला रंग जमा कर चुका था। सियार उस नांद में गिर पड़ा। इसे देख कुत्ते चले गये।

सियार नीले रंग में खूब भीग चुका था, इसलिए उसके बदन पर नीला रंग लग गया। एक कहावत भी है न—मूर्ख, औरत, केकड़ा, शराबी और नीला रंग एक बार छिपक गये तो छूटते नहीं। सियार बड़ी मुश्किल से नीले रंग की नांद से बाहर आकर जंगली की ओर भाग गया। इस बार कुत्तों ने उसे देखा भी, पर उसके रंग को देख पहचान न पाये। इसलिए उसे भागने दिया।

सियार जंगल में लौट आया। सिंह, हाथी, बाघ, चीता, भेड़िया, भालू तथा अन्य जंगली जानवरों ने सियार को देखा और परस्पर वे पूछने लगे—"ऐसे प्राणी को हमने कभी नहीं देखा है! यह नीले रंग का जानवर कौन है?"

उस नये जानवर के बल, पराक्रम एवं वीरता से वे सब जानवर अपरिचित थे, इसलिए सियार को देखते ही वे सब दूर हट गये।

चण्डरव ने देखा कि अन्य जानवर उसे देख दूर हटते जा रहे हैं, तब वह बोला—"हे जंगली जानवरो, तुम लोग मुझे देख क्यों डर रहे हो? इंद्र ने देखा कि तुम पर

शासन करने के लिए कोई योग्य राजा नहीं है, इसलिए तुम लोगों पर शासन करने के लिए उन्होंने मुझे यहाँ पर भेज दिया है। इसीलिए मैं आया हूँ। मेरे शासन में तुम लोग सुखी रहो। आज से मैं तुम लोगों का राजा हूँ। मेरा नाम कुकुद्रुम है।"

ये बातें सुनकर सिंह, बाघ, हाथी, चीता, भालू, भेड़िया, बंदर, हिरण, खरगोश तथा अन्य सभी जंगली जानवर भी सियार के सामने साष्टांग दण्डवत करके बोले—"महाराज, आपके आदेश का हम सब पालन करेंगे।"

कुकुद्रुम ने सिंह को अपने मंत्री के रूप में तथा अन्य जानवरों को दूसरे पदों पर नियुक्त किया और अपनी जाति के सियारों की उपेक्षा करके उनको दूर भगा दिया। रोज सिंह वगैरह जानवर शिकार खेलकर मांस लाते और कुकुद्रुम को सौंप देते। उस मांस को राजधर्म के अनुसार कुकुद्रुम सभी जानवरों में बांट देता था।

थोड़े समय तक कुकुद्रुम का शासन अच्छे ढंग से चला।

एक दिन रात को सियार शीघ्र ही अपना भोजन समाप्त कर लेट गया। सिंह, बाघ, हाथी, चीता और बंदर उसका पहरा दे रहे थे। अचानक सियारों के दल की सीटियों से सारा जंगल गूंज उठा। कुकुद्रुम अपने आपको भूल गया। उसके शरीर में रोमांच हो आया। उसी खुशी में वह बिस्तर पर से कूद पड़ा और ज़ोर-ज़ोर से सीटी बजाने लगा।

सियार की चिल्लाहट को सुनकर सिंह इत्यादि जानवरों ने सोचा—"अरे, यह तो साधारण सियार है।" इस अपमान के कारण सबके सिर लज्जा से झुक गये। लेकिन इतने में ही उनका क्रोध उमड़ पड़ा। वे बोले—"क्या यह क्षुद्र जानवर हम लोगों की सेवाएँ पाता है? इसको मार डालना चाहिए।" ये बातें सुन सियार बचकर भाग जाना चाहता था, लेकिन बाघ ने उसे पकड़ कर मार डाला।

१५२: "काग" का पेड़

बोतलों में लगाने वाले काग एक प्रकार के पेड़ की छालों से तैयार करते हैं। यह पेड़ स्पेन, पुर्तगाल, अल्जीरिया तथा इटली देशों में पैदा होता है। पेड़ से छाल निकालने की विधि को चित्र में देख सकते हैं। पुरानी छाल को निकालने के बाद पेड़ से नयी छाल उग आती है। इस प्रकार हर ८, १० वर्षों में एक बार छाल निकाली जा सकती है। निकालते जाने पर छाल से अच्छे काग मिल जाते हैं।

Photo by S. B. Takalkar
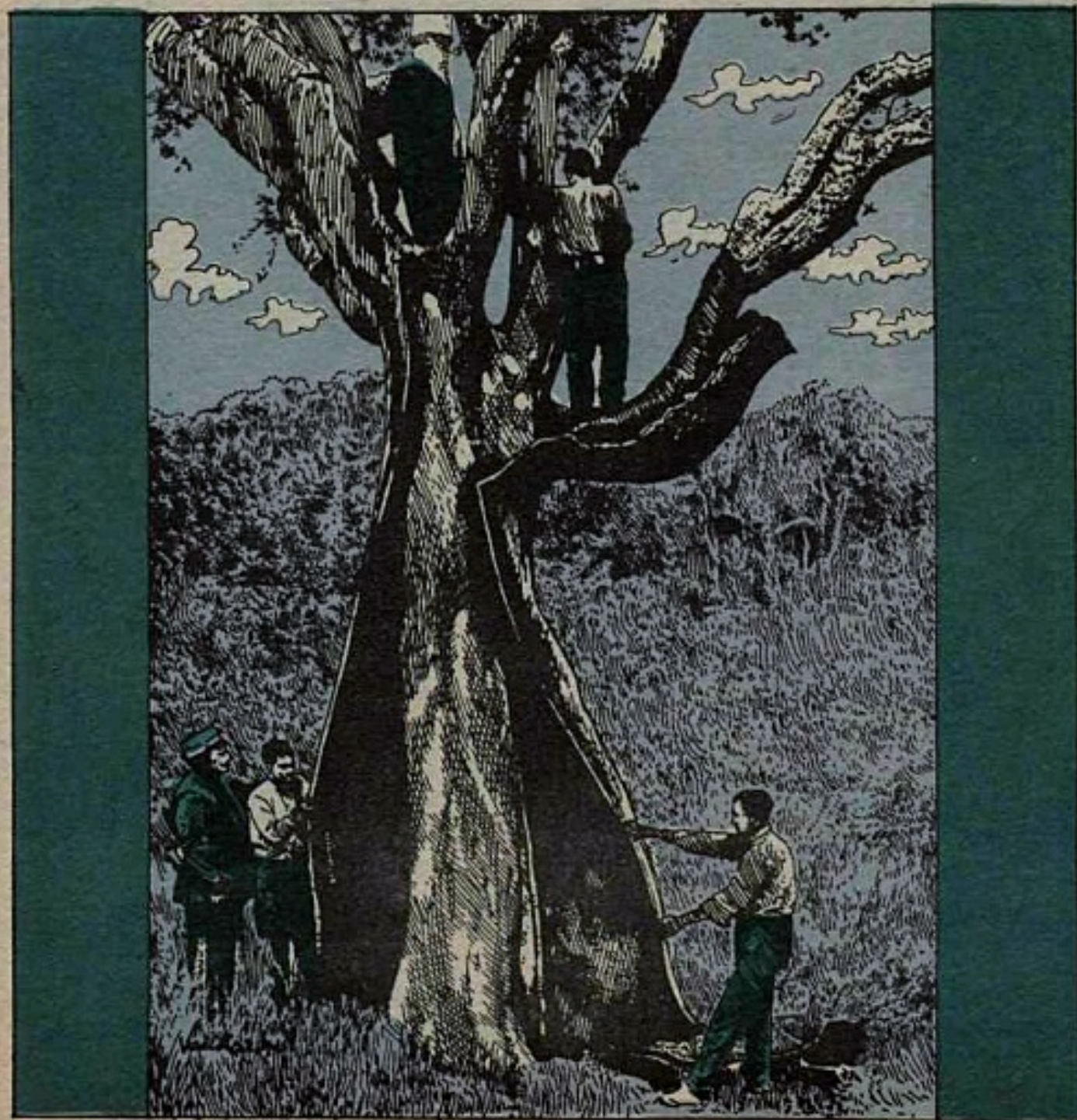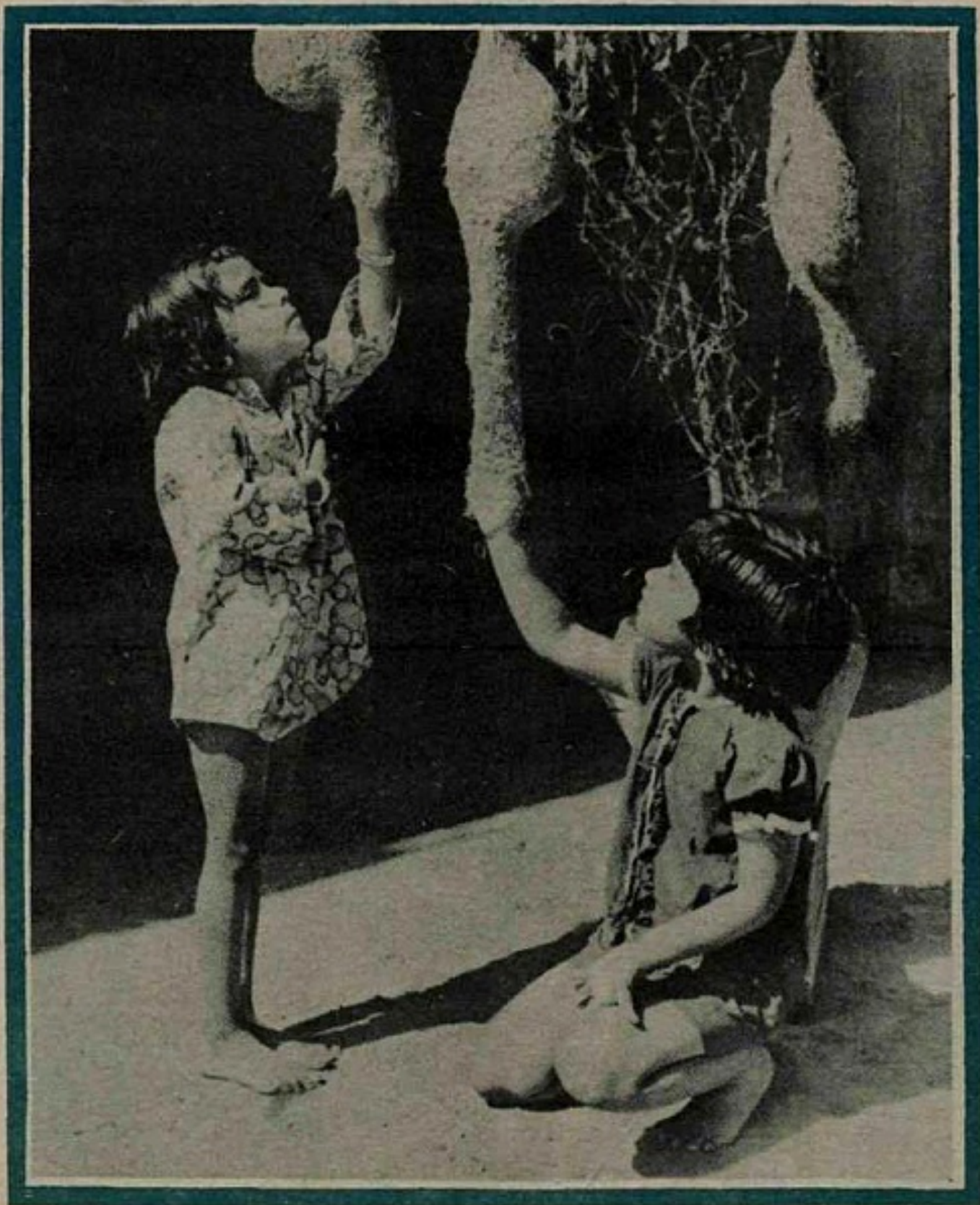
पुरस्कृत परिचयोक्ति

"कहीं अज्ञानता का है डेरा"

प्रेषिका : दीपाली अग्रवाल

Photo by Prabhakar Mahadik
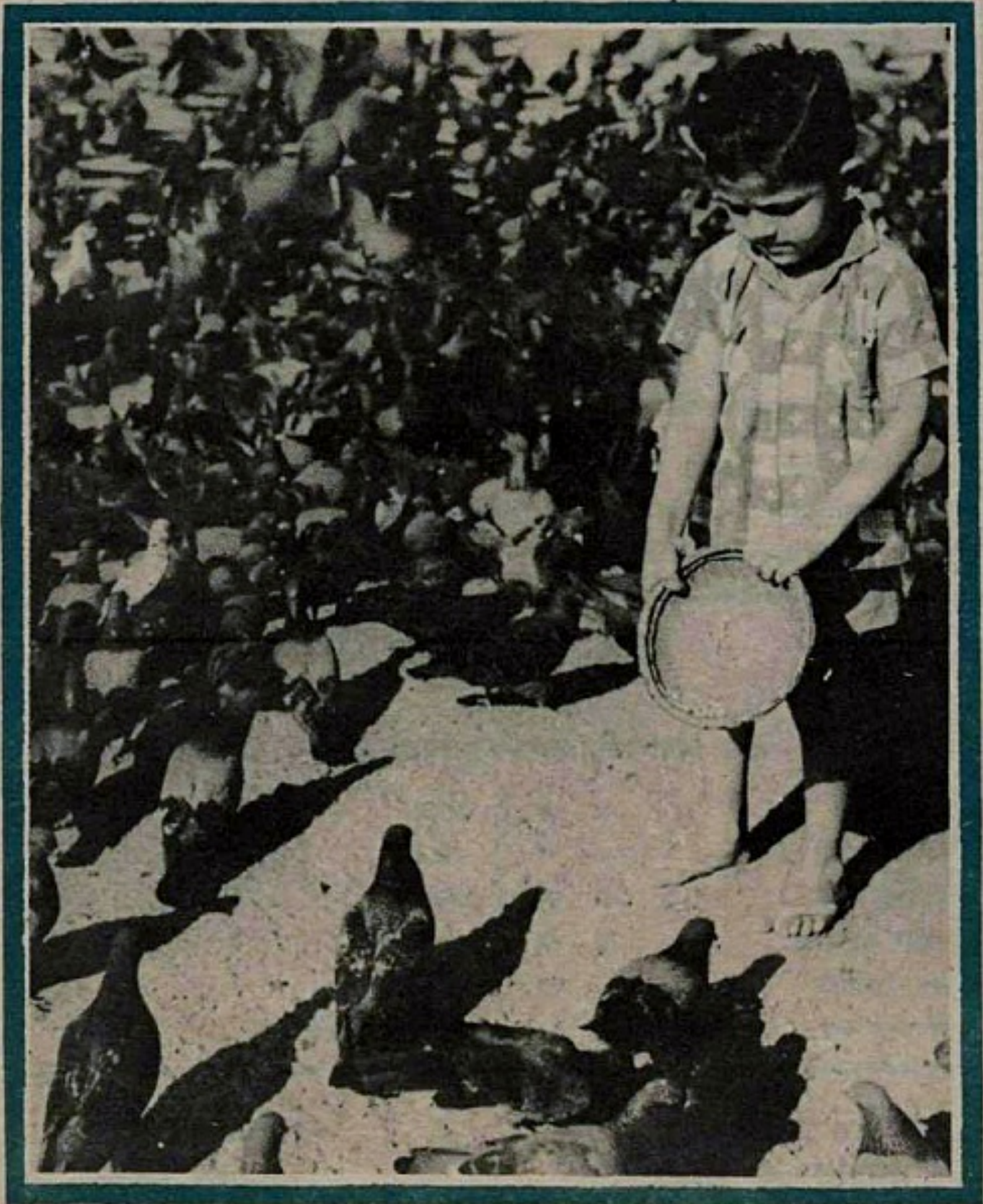
५/ए, के. सी. बोस रोड़,
कलकत्ता - ४

“कहीं महानता का बसेरा”

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

*

* परिचयोक्तियाँ सितम्बर १० तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।
* परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ नवम्बर के अंक में प्रकाशित की जायंगी !

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-600026. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

Photo by: **PRASAD**

FOOT - PATH

CHANDAMAMA (Hindi) SEPTEMBER 1974 Regd. No. M. 5452